ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 2 दिसम्बर 2011 - जनवरी 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

क्या कर्म अवश्य भोगने पड़ते है?	डा. महेश पारासर	4
शनि ग्रह का हमारे जीवन पर प्रभाव	डा. रचना भारद्वाज	6
"महाशिवरात्रि व्रत"	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	7
षष्ठी देवी व्रत	पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	8
सन् 2012 के ग्रह गोचरानुसार		
द्वादश राशियों का वार्षिकफल	डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल	9
हर रंग कुछ कहता है	श्रीमती रेखा जैन	10
बेडरुम में झगड़ा होने के कारण	पं. दयानन्द शास्त्री	11
बसंत पंचमी	पवन कुमार मेहरोत्रा	12
संकीर्तन से ही प्रभु प्रसन्ना होते हैं	सुरेश अग्रवाल	12
वास्तुशास्त्र के प्रभावकारी स्त्रोत	श्रीमती रेनू कपूर	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
हित–अहित	विजय शर्मा	16

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

क्या कर्म अवश्य भोगने पड़ते है?

क्या ज्ञानी को भी किये कर्म अवश्य ही भोगने पड़ते है? अथवा किसी दशा में बिना भोगे भी कर्मो की परिसर्माप्त हो सकती है? इस जटिल समस्या पर प्रकाश डाले बिना यदि इस प्रघट्ट का उपसंहार कर दिया जाए तो यह 'ज्ञान–काण्ड–विचार' अधूरा ही रह जाता है। एतदर्थ इस विषय का भी प्रतिपादन किया जाता है। कर्म विपाक का सिद्धान्त है कि चाहे सौ करोड़ कल्प भी क्यों न बीत जायें परन्तु बिना भोगे कभी कर्म नहीं छूटता।

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु तज्जन्य फल भोगने में सर्वथा परतन्त्र है। मीमांसक लोग तो कर्म को ही ईश्वर मानते हैं, ऐसी स्थिति में कर्मो के क्षय हो जाने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। भोक्ता, भोग्य और भोगावधि तीनों वस्तुवें एकमात्र कर्म पर ही अवलम्बित हैं। बिना मूल कारण संसार में कुछ भी नहीं होता। ऐसी स्थिति में नानाविध योनियों में जीवों के नानाविध योनियों में जीवों के नानाविध देह, देहधारणर्थ उनके नानाविध खान–पान, अथः विभिन्न आयुःस्तर–यह सब तारतम्य निर्मूल नहीं हो सकता। मानव समाज में ही कोई जन्मजात अन्ध कुष्टी तो कोई सर्वागं–सुन्दर हृष्ट–पुष्ट। कोई हीन दीन दरिद्र तो कोई राजा बाबू नगरसेठ। कोई स्वल्पायु तो दूसरा क्या कर्म अवश्य भोगने पड़ते हैं?

संवत् चौदह के गदर की आंखों देखी घटनाओं का वर्णन करे। आखिर यह सब भेद क्यों?

पुनर्जन्म और कर्म–विपाक सिद्धात में विश्वास न रखने के कारण अहिन्दू सम्प्रदायों के पास इन जन्मजात वैषम्यो के मूल कारण का कोई उत्तर नहीं, परन्तु वदादि शास्त्रों के कर्मवाद सिद्धान्त को दर्शनकार महर्षि ने केवल एक सूत्र में उपनिबद्ध कर दिया है जिससे जीव–सृष्टि के नानाविध तारतम्य का मूल हेतु विदित हो जाता है। जैसे बीज की विद्यमानता में ही अनुकूल अवसर आने पर उसें अंकुर फूट पड़ता है, इसी प्रकार जीवों के प्राक्कृत शुभाशुभ कर्म ही विपक्व होकर उसे जन्मरुप में अंकुरित करते है जिनके तारतम्य से ही जाति आयुः और भोगों का वैविध्य दृष्टिगोचर होता है।

कहना न होगा कि भोक्ता, भोग्य, और भोगावधि तीनों वस्तुओं का जन्मजात विभेद कर्म–विपाक का ही विपरिणाम है।

भर्तृहरि कवि ने–**'ब्रह्म येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे'** आदि श्लोक बड़े ही व्यंग्यपूर्ण रोचक ढंग सेकर्म का प्राधान्य प्रकट करते हुए लिखा है कि कर्म के ही नियोग से ब्रह्माजी कुम्हार की भान्ति निरन्तर ब्रह्माण्ड रुप मटके घड़ने में व्यस्त रहते हैं, कर्म के ही नियोग से श्रीविष्णु भगवान् संरक्षा के गुरुतर भारोद्वहन में सदैव जहां

जागरुक बने रहने के लिए विषधर सर्प के आसन पर विराजते हैं, सहस्त्र मुखों से निस्मृत फूत्कारों के कोलाहलपूर्ण वातावरण में निंद्रा, तन्द्रा हराम हो जाती है। कर्म के ही कटाक्ष कोण से प्रभावित शिवशंकर हिमालय की ठिठुरती सर्दी में दिगम्बर बने विष पी–पीकर अपनी ड्यूटी को सरअन्जाम देते हैं। कर्म के चक्कर में पड़े ही सूर्यचंद्रादिक ग्रहोपग्रह अहर्निश परिभ्रमण करते हैं। सो ऐसे सर्वातिशायी खुदा के बड़े भाई कर्म महाराज को हमारी सौ–सौ जुहार।

यद्यपि उपर्युक्त वर्णन केवल चमत्कारमय कवित्व है तथापि इसमें तथ्य अंश का अभाव नहीं। वस्तुतः श्रीमन्नारायण भगवान् जब **'लोकवत्तु लीलाकैवल्यम्'** में प्रवृत्त होते हैं तब उन्हें स्वयं **'सत्त्वं रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणस्तैर्युक्तः परः पुरुष एक इहास्य धत्ते। स्थित्यादये हरिविरञ्चिहरेति संज्ञाम्.....'** के अनुसार प्रकृति के सत्त्व, रज और तमः इन तीन गुणों के तारतम्य से सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति और संहार के लिए ब्रह्मा विष्णु और रुद्र रुप में अवतीर्ण होना पड़ता है। यह ठीक है कि वे सर्वतंत्र स्वतन्त्र हैं, किसी दूसरे का नियोगांकुश उन्हें ऐसा करने को बाध्य हीं कर सकता, तथापि वे 'कर्तुम्–अकर्तुम्–अन्यथा कर्तुम्' प्रभु होते हुए भी स्वेच्छा से अपने लीला नियमों में तो स्वयं आबद्ध हैं।

भूर्भुवः स्व तीनों लोक का प्रलय हो जो पर यहां के अभुक्तकर्म उच्चात्मा प्राणी महर्लोक में निवास करते हैं। जब उन प्राणियों के अवशिष्ट कर्म भोगोन्मुख होते हैं तब भगवान् पुनः सृष्टि का उपक्रम करके उन्हें कर्मोपभोग का अवसर देते हैं। यह स्थिति निस्सन्देह श्रीमन्नारायण को भी जीवों के कर्मोपभोगार्थ पुनः सृष्टि 'स्थति–संहार–लीलाभिनय करने को प्रेरित करती है। प्रकारान्तर से भक्तों के कर्मोपभोग का प्राबल्य ही भगवान् की तादृशी लीलाओं का हेतु हुआ। इस कर्म–प्राधान्य को इससे भी अधिक समझा हो तो सीधा–सीधा यूँ कह लीजिये कि– मनु–शतरुपा ने तपःकर्म से भगवान् को सन्तुष्ट किया और तादृश पुत्रप्राप्ति का वर माँगने पर 'नृप तव तनय होव मैं आई' के अनुसार उन्हें स्वयं अवतरित होना पड़ा। प्रहलाद ने स्तंभ में भगवत्सत्त की व्यापकता का उद्घोष किया। भगवान् को–**'सत्य विधातुँ निजभृत्यभाषितम्.**

....मध्ये सभायां न मृगं न मानुषम् के अनुसार भक्त की वाणी को सत्य सिद्ध करने के लिये नृसिह रुप से अवतरित होना पड़ा। अन्यान्य भक्तों के कर्म–कलाप के प्राबल्य से किसी का पुत्र, किसी का भाई, किसी का पति, तो किसी का जँवाई बनने को बाध्य होना पड़ा। अत्याचार पीड़ित अबला के संरक्षाणार्थ लडते–लड़ते अपने प्रिय प्राणों को भी न्यौछाबर कर देने वाले जटायु के लोकोत्तर सत्कर्म से पसीज कर श्री राम भगवान् को उसके पंखों में लगी धूल अपनी जटाओं से झाड़नी पड़ी, और सूर्य्यचंद्र के उद्गम केन्द्र अपने विशाल नेत्रों से गंगा यमुना की भाँति झरती हुई गर्म और ठण्डी दोनों धाराओं को समशीतोष्ण कर के उसे अन्तिम स्नान कराना पड़ा।

सो कर्म का इतना बड़ा महत्त्व है कि न केवल यह जड़चेतनात्मक जंगम जगत् ही कर्मसम्भूत है, किन्तु जगन्नायक जनार्दन के तत्तत्–अवतार भी कर्म–सम्भूत ही हैं, फिर चाहे वे कर्म भक्तों द्वारा उपार्जित ही क्यों न हों। जब सर्वशक्तिमान् भी कर्मफल दाता के रुप में कर्मो से असंयुक्त नहीं, फिर यह अल्पशक्ति जीव बिना भोगे कर्मफल के पचड़े से कैसे छूट सकता है? न्यायालय में न्यायाधीश और अभियुक्त दोनों समान हैं। यह ठीक है कि न्यायाधीश निर्णायक है और अभियुक्त बन्धन मुक्ति=सजा रिहाई का भोक्ता है, परन्तु आखिर है दोनों कोर्ट सम्बद्ध व्यक्ति। ठीक इसी प्रकार कर्म–फलदाता ईश्वर और कर्म फल भोक्ता जीव दोनों ही कर्मसंपृक्त–कोटि में हैं। कर्म बिना भोगे क्षीण नहीं होता, प्रकृति का सर्व साधारण नियम यही है।

महेश पाराशर

अमृत वचन

1. एक दाना भी हाथ से बो दोगे तो पूरा वृक्ष उपहार में मिलेगा।
2. यदि मनुष्य भैतिकता का आकर्षण छोड़ दे तो उसे आत्मोन्नति का पर्याप्त अवसर मिल सकता है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– प्रश्न – मेरी कुण्डली के हिसाब से मेरा प्रमोशन कब तक होने की सम्भावना हैं।

राजेश सिंह– नई दिल्ली

उत्तर– आपकी कुण्डली के अनुसार निकट भविष्य में आपके प्रमोशन की सम्भावना नहीं है। उपाय हेतु आप मूँगा व मोती रत्न धारण करें और सूर्य की उपासना करें

प्रश्न– कुछ कारणों से मेंरा पुत्र इस वर्ष परीक्षा में फेल हो गया है। अगले वर्ष अच्छे नम्बरों से पास हो कुछ तरीका बतायें।

अनिल कुमार– सोनीपत

उत्तर– बच्चे के गले में सरस्वती यंत्र धारण करवायें। एक पन्ना सोने में सीधे हाथ की कनिष्ठा में धारण करवायें तथा रोजाना गणेश उपासना करवायें। मनोकामना पूर्ण होगी

डा.महेश पाराशर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– वास्तु अनुसार तुलसी का पौधा घर में कहाँ लगाना चाहिए। बताने की कृपा करें।

राधा किशन शर्मा, हाथरस

समाधान– वास्तु के अनुसार घर में तुलसी का पौधा लगाना अत्यन्त शुभ माना गया है। इससे घर के वास्तु दोषों में कमी आती है। विज्ञान के अनुसार भी तुलसी का पौधा वातावरण के हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है। इसे घर के ईशान कोण में अथवा बड़ा स्थान में लगाना शुभ माना गया है तथा सुबह शाम इसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए।

समस्या– बच्चों का कमरा किस रंग से रंगवाना चाहिए जिससे वह शरारत न करें और उनका मन पढाई में लगें। उपाय बताकर अनुग्रहीत करें।

सदानन्द वर्मा, आगरा

समस्या– बच्चों के कमरे में गहरे रंगों का प्रयोग कभी भी नही करना चाहिए क्योकि इससे बच्चों के मन मस्तिष्क पर गहरा व प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। यथासम्भव वच्चों के कक्ष में हल्के, आनन्दायक और नेत्रों को हल्का हरा, हल्का पीला ओर क्रीम रंग सर्वाधिक उपयुक्त रहता है। इसके अलावा अन्य हल्के रंगो के प्रयोग से बच्चों का मन मस्तिष्क शान्त व एकाग्र होता है।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

शनि ग्रह का हमारे जीवन पर प्रभाव

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

शनि भगवान सूर्य तथा छाया (संवार्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्मपुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है– बचपन से ही शनि देवता भगवान् कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती–साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु स्नान करके पुत्र प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुँची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में मग्न थे। इहें बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसलिये उसने क्रूद्ध होकर शनि देवता को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायगा। ध्यान टुटने पर शनि देव ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किनतु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि इनक द्वारा किसी का अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी–शकट भेदन कर दे तो पृथ्वी पर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाय और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाय। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाता तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का यह योग आ जाएगा तो प्रजा अन्न–जल के बिना तड़प–तड़पकर मर जायगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिये महाराज दशरथ अपने रथ पर सवार होकर नक्षत्र मण्डल में पहुँचे। पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भाँति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारस्त्र का संधान किया। शनि देवता महाराज दशरथ की कर्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर माँगने के लिये कहा। महाराज दशरथ ने वर माँगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट–भेदन न करें। शनि देव ने वर देकर महाराज दशरथ को संतुष्ट कर दिया। शनि की अरष्टि दशा होने पर या साढ़ेसाती या ढैय्या के सयम रोग, असफलता पीड़ा तथा विवाद होता हैं। इसकी शान्ति के लिए शनि का विधिवत दान करना चाहिए। शनि ग्रह के प्रकोपित व्यक्ति को हाथ पैर में चोट, लगना, पागलपन (उन्माद, दिमागी भारीपन, टेन्शन) हृदय में पीड़ा, जोड़ों में दर्द, कैंसर, किसी ग्रन्थि में बीमारी, लकवा, वातरोग व मन में वैराग्य होता हैं। इन सब रोगों का कारण शनि ग्रह है। अतएव इसकी शान्ति के लिए विधिवत शनि का दान करना चाहिए।

शनि ग्रह की दान सामग्री :– कोयला लकड़ी का , रांगा, नीलम, जामनी, आलू, उड़द, जौ, राई, सरसों का तेल, शराब, चायपत्ती, नील, काली ऊन, चमड़े का काला जूता, पटसन, काले तिल, लोहे का चिमटा (रोटी सेंकेने वाला), भैंस या भैंस के कुछ बाल, तेल में पकाये उड़द के बड़े, काला अथवा नीला फूल, दक्षिणा।

ये सभी वस्तुएँ महापातक को शनिवार के दिन दोपहर के समय पीड़ित व्यक्ति से सूजन करवाकर दें। यदि शनि का अशुभ फल हो तो शनि का जप, पूजन, ब्राह्मण भोजन करवो से कल्याण की प्राप्ति होती हैं तथा शान्ति प्राप्त होती हैं।

शनि की शांति हेतु–यदि आपका शनि ग्रह खराब (अरिष्ट) हो या पीड़ाकारक, रोगकारक बन रहा हो तो असफलतायें साथ छोड़ने को तैयार न हों तो आपको निम्नलिखित उपाय करना चाहियें।

1. कच्चा नारियल अपने ऊपर से 7 बार उतारकर बहते पानी में बहायें। **2.** गाय के माथे पर केशर का तिलक शनिवार को लगायें। **3.** पितरों के लिए अमावस्या को ब्राह्मणों को सीधा, दक्षिणा दान करें। **4.** पीले फूल वाले पौधे घर में न लगायें। **5.** शनि मन्दिर में सायंकाल दर्शन करने जायें। **6.** 1 मुट्ठी काले उड़द चलते पानी में बहायें। 7. नारियल के तेल में कपूर मिलाकर लगायें। **8.** यूकेलिप्टिस के पत्ते शनिवार को अपने पास रखें। **9.** शनि स्तोत्र या शनि चालीसा का पाठ करे। **10.** शनि का विधिवत दान करें। **11.** उड़द के पापड़ बनवाकर खायें। **12.** नीले रंग का फूल भैरव मंदिर में चढ़ायें। **13.** बीच वाली मध्यमा अँगली में काले घोड़े की शुद्ध नाल प्राण प्रतिष्ठित करके पहनें। **14.** शनि के दिन झगड़ा टाल दें अन्यथा यह उग्र रुप ले सकता है। इन सावधानियों तथा उपायों को करने पर आपको शीघ्र शान्ति अनुभव होने लगेगी।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2850666 ❋❋❋

"महाशिवरात्रि व्रत"

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

शिव का शाब्दिक अर्थ कल्याणकारी होता है। इस दृष्टि से महाशिवरात्रि का अर्थ हुआ कल्याणकारी रात्रि। यह रात्रि महा पुण्यदायी होती है। इस समय में किये गए दान। शिवलिंग की पूजा, स्थापना एवं अभिषेक हवन का विशेष फल प्राप्त होता है।

सृष्टि के आरंभ में इसी दिन महारात्रि को भगवान शिव का ब्रह्मा की भौंहों से रुद्ररुप में अवतरण हुआ था। प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष के समय तांडव करते हुए भगवान शिव ने ब्रह्मांड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर दिया था इसलिए इसे महाशिवरात्रि अथवा 'कालरात्रि' कहा जाता है। महाशिवरात्रि शिव के लिंगरुप में उद्‌भव का दिन भी माना जाता है। यूं भी भगवान शिव संहार शक्ति और तमो गुण के अधिष्ठता माने जाते है। इसीलिए तमोमयी रात्रि से उनका स्नेह होना स्वभाविक ही कहा जाऐगा। यही कारण है कि उनकी आराधना न केवल रात्रि मे अपितु सदैव प्रदोष काल में सूर्यास्त और रात्रि की सन्धि बेला में करने का शास्त्रसम्भत विधान है।

महाशिवरात्रि का व्रत भगवान शिव की पूजा– आराधना के निमित्त बनाया गया है। इस व्रत को भगवान श्री राम, राक्षस राज रावण, दक्ष कन्या सती हिमालय कन्या पार्वती और विष्णु पत्नि लक्ष्मी ने भी किया है। जो मनुष्य शास्त्रानुसार इस व्रत में उपवास रखकर जागरण करते है उनको अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है। इस दिन पारद शिवलिंग का विधि–विधान से अभिषेक किया जाये तो सैंकड़ों गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है।

महाशिवरात्रि को गंगास्नान का बड़ा माहात्म्य बताया गया है। शिवजी की पूजा मे बेलपत्र को चढ़ाना विशेष महत्व रखता हैं ऐसा बिल्वपत्र जिसमें तीन या पाँच पत्ते एक में हो तथा स्वच्छ हों। भक्त चढ़ाए गए बेलपत्र की संख्या के बराबर युगों तक कैलासधाम में सुखपूर्वक वास करता है। वह श्रेष्ठ योनि में जन्म लेकर भगवान शिव का परम भक्त होता है। पूजा में केवल तीन पत्तियों या पाँच पत्तियों वाले अखंडित बेलपत्र ही चढ़ाने का विधान शास्त्र–सम्मत् है। जो मन बचन कर्म से श्रद्धा और समर्पण के साथ भगवान शिव को अर्पित किया गया हो। शास्त्रों के अनुसार वेलपत्र की तीन पत्तियों को शिव के त्रिनेत्र का प्रतीक माना गया है। स्मराण रहे कि शिवलिंग पर चढ़ाए पुष्प, फल तथा दूध आदि के नैवेद्य को ग्रहण नहीं करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। भगवान शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम की मूर्ति रखना अनिवार्य है। यदि शिव की मूर्ति के पास शालि ग्राम हो तो नैवेद्य खाने का दोष नहीं लगता है।

शिव को प्रिय है रुद्राभिषेक – महाशिवरात्रि पर्व है भोले भंडारी की पूजा आराधना का। शिवजी को पूजा में सबसे प्रिय हैं रुद्राभिषेक इसके द्वारा शिव जी अति शीघ्र प्रसन्न हो जाते है। अगर हम अपने कन्याण के लिए भगवान सदाशिव की निष्काम भाव से पूजा करे तो भगवान शिव हमें अनन्त काल तक आर्शीवाद देते हैं।

शास्त्रों में अलग–अलग इच्छाओं की पूर्ति के लिए रुद्राभिषेक के निमित्त विभिन्न वस्तुऐं बताई गई है। जिन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

–धन की प्राप्ति के लिए शहद एवं देशी घी से भगवान शिव का अभिषेक करें।

–मोक्षप्राप्ति के लिए किसी तीर्थ स्थान के जल से अभिषेक करें

–पुत्र प्राप्ति की इच्छाओं के लिए कच्चे दूध से अभिषेक करें।

–पशुपति के लिए दही से रुद्राभिषेक करें।

–लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए गन्ने के रस द्वारा शिवजी को प्रसन्न करें।

–जल की धारा भगवान शिव के अति प्रिय है अतः बुखार के कोप को शान्त करने के लिए जल धारा से अभिषेक करें

–प्रमेह रोग के लिए विशेष रुप से केवल दूध की धारा से अभिषेक करना चाहिए इससे हर कामना की पूर्ति होती है।

–बुद्धि की जड़ता को दूर करने के लिए शक्कर मिले दूध से अभिषेक करना चाहिए ऐसा करने से बुद्धि श्रेष्ठ होती है।

–शत्रुओं के नाश के लिए सरसों के तेल से अभिषेक करें।

–पापों से मुक्ति के लिए शहद से जिन की संतानों मर जाती है वह गाय के दूध से अभिषेक करें।

–आजीवन आरोग्य रहने के लिए देशी घी से अभिषेक करें

–दीर्घायु के लिए गाय के दूध से शिव को प्रसन्न करें

–पुत्रप्राप्ति के लिए जल में चीनी मिलाकर अभिषेक कर सकते हे।

आप शिव जी का मंत्र बोलकर शिवरात्रि के पावन पर्व पर उपरोक्त अभिषेक कर सकते है।

इस दिन ऐसे लोग जिनकी कुंडली में मारकेश या क्षीण मारकेश या जिनकी तबियत खराब रहती हो वह महामृत्युजंय का लॉकेट धारण कर सकते है।

इन मंत्रों द्वारा भगवान के महालिंग का अभिषेक करने पर भगवान शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तों की सारी कामनाओं पूर्ण करते है।

इसके अतिरिक्त शिवरात्री को हवन करना भी बहुत शुभ होता है। क्योंकि मंत्र सिद्ध करने की रात्रि भी मानी जाती है।

इसके लिए हवन सामग्री में तिल चावल, जौ, शक्कर सब बराबर अनुपाप में ले एवं इसी अनुपात में उसमें घी मिला लेना चाहिए। इस दिन हवन करने से कई गुना शुभ फल प्राप्त होता है।

❋ ❋ ❋

षष्ठी देवी व्रत
(30 दिसम्बर 2011)

पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
फोन नं. 09811965774

षष्ठी देवीका व्रत प्रत्येक मास में षष्ठी तिथि के अवसर पर यत्नपूर्वक करने व मनाने का विधान है। बालकों के प्रसव ग्रह में छठे दिन इक्कीसवें दिन तथा अन्नप्राशन के मांगलिक अवसर पर भी षष्ठी देवी व्रत का विधान देवी भागवत में वर्णित है। भगवती षष्ठी मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण 'षष्ठी' देवी नाम से प्रसिद्ध बालकों की ये अधिष्ठात्री देवी है– इन्हें विष्णुमया और बालदा भी कहा जाता है। मातृकाओं में 'देवसेना' नाम से ये प्रसिद्ध हैं। उत्तम व्रत का पालन करने वाली इन साध्वी देवी को स्वामी कार्तिकेय की पत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त है। वे प्राणों से भी बढ़कर इनसे प्रेम करते हैं। बालकों को दीर्घायु बनाना तथा उनका भरण–पोषण एवं रक्षण करना इनका स्वाभाविक गुण है। ये सिद्धयोगिनी देवी अपने योग के प्रभाव से बच्चों के पास सदा विराजमान रहती हैं। पुत्र प्रदान करने वाला यह परम सुखदायी व्रत है।

देवर्षि नारद जी के पूछने पर भगवान नारायण ने स्वयं श्रीमुख से धर्मदेव के मुख से वर्णित उपाख्यान को नारद जी को सुनायाः– **उपाख्यान व पूजाविधि–** प्रियव्रत नामके एक राजा हो चुके हैं। उनके पिताका नाम था– स्वायम्भुव मनु। प्रियव्रत योगिराज होने के कारण विवाह करना नहीं चाहते थे। तपस्या में उनकी विशेष रुचि थी परंतु ब्रह्माजीकी आज्ञा तथा सत्प्रयत्नके प्रभाव से उन्होंने विवाह कर लिया। मुने! विवाह के बाद सुदीर्घ कालतक उन्हें कोई संतान नहीं हो सकी। तब कश्यपजीने उनसे पुत्रेष्टियज्ञ कराया। राजाकी प्रेयसी भार्याका नाम मालिनी था। मुनिने उन्हें चरु प्रदान किया। चरुभक्षण करने के पश्चात् रानी मालिनी गर्भवती हो गयीं। तत्पश्चात् सुवर्ण के समान प्रतिभावाले एक कुमारकी उत्पत्ति हुई परंतु सम्पूर्ण अङ्गों से सम्पन्न वह कुमार मरा हुआ था। उसकी आँखें उलट चुकी थीं। उसे देखकर समस्त नारियाँ तथा बान्धवों की स्त्रियाँ भी रो पड़ी। पुत्र के असह्य शोक के कारण माता को मूर्च्छा आ गयी।

मुने! राजा प्रियव्रत उस मृत बालक को लेकर श्मशान में गये। उस एकान्तभूमि में पुत्र को छाती से चिपकाकर आँखों से आँसुओं की धारा बहाने लगे। इतने में उन्हें वहाँ एक दिव्य विमान दिखायी पड़ा। शुद्ध स्फटिक मणि के समान चमकने वाला वह विमान अमूल्य रत्नों से बना था। तेज से जगमगाते हुए उस विमान की रेशमी वस्त्रों से अनुपम शोभा हो रही थी। अनेक प्रकार के अद्भुत चित्रों से वह विभूषित था। पुष्पों की माला से वह सुसज्जित था। उसीपर बैठी हुई मन को मुग्ध करने वाली एक परम सुन्दरी देवी को राजा प्रियव्रत ने देखा। श्वेत चम्पा के फूल के समान उनका उज्ज्वल वर्ण था। सदा सुस्थिर तारुण्य से शोभा पाने वाली वे देवी मुसकरा रही थीं। उनके मुखपर प्रसन्नता छायी थी। रत्नमय भूषण उनकी छबि बढ़ाये हुए थे। योगशास्त्र में पारंगत वे देवी भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये आतुर थीं। ऐसा जान पड़ता था। वे मानो मूर्तिमयी कृपा ही हों। उन्हें सामने विराजमान देखकर राजा ने बालक को भूमि पर रख दिया और बड़े आदर के साथ उनकी पूजा और स्तुति की। नारद! उस समय स्कन्दकी प्रिया देवी षष्ठी अपने तेजसे देदीप्यमान थीं। उनका शान्त विग्रह ग्रीष्मकालीन सूर्य के समान चमचमा रहा था। उन्हें प्रसन्न देखकर राजा ने पूछा।

राजा प्रियव्रत ने पूछा–सुशोभने! कान्ते! सुव्रते! वरारोहे! तुम कौन हो, तुम्हारे पतिदेव कौन है और तुम किसकी कन्या हो? तुम स्त्रियों में धन्यवाद एवं आदर की पात्र हो।

नारद! जगत् को मङ्गल प्रदान करने में प्रवींण तथा देवताओं के रण में सहायता पहुँचाने वाली वे भगवती 'देवसेना' थीं। पूर्व समय में देवता दैत्यों से त्रस्त हो चुके थे। इन देवी ने स्वयं सेना बनकर देवताओं का पक्ष ले युद्ध किया था। इनकी कृपा से देवता विजयी हो गये थे। अतएव इनका नाम 'देवसेना' पड़ गया। महाराज प्रियव्रत की बात सुनकर ये उनसे कहने लगीं।

भगवती देवसेना ने कहा–राजन्! मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूँ। जगत्पर शासन करने वाली मुझ देवी का नाम 'देवसेना' है। विधाता ने मुझे उत्पन्न करके स्वामी कार्तिकेय को सौंप दिया है। मैं सम्पूर्ण मातृकाओं में प्रसिद्ध हूँ। स्कन्द की पतिव्रता भार्या होने का गौरव मुझे प्राप्त है। भगवती मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने के कारण विश्व में देवी 'षष्ठी' नाम से मेरी प्रसिद्धि है। मेरे प्रसाद से पुत्रहीन व्यक्ति सुयोग्य पुत्र, प्रियाहीन जन प्रिया, दरिद्री धन तथा कर्मशील पुरुष कर्मो के उत्तम फल प्राप्त कर लेते है। राजन्! सुख, दुःख, भय, शोक, हर्ष , मंगल, सम्पत्ति और विपत्ति–ये सब कर्म के अनुसार होते है। अपने ही कर्म के प्रभाव से पुरुष अनेक पुत्रों का पिता होता है। और कुछ लोग पुत्रहीन भी होते हैं। किसी को मरा हुआ पुत्र होता है और किसी को दीर्घजीवी– यह कर्म का ही फल है। गुणी, अंगहीन, अनेक पत्नियों का स्वामी, भार्यारहित, रुपवान, रोगी और धर्मी होने में मुख्य कारण अपना कर्म ही है। कर्म के अनुसार ही व्याधि होती है और पुरुष आरोग्यवान् भी हो जाता है।

अतएव राजन्! कर्म सबसे बलवान् है– यह बात परम सत्य हो गये। राजा ने सर्वत्र पुत्र–प्राप्ति के श्रुति में कही गयी है। उपलक्ष में मांगलिक कार्य आरम्भ करा दिया। भगवती की पूजा की। ब्राह्मणों को बहुत–सा धन दान किया। तब से प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि के अवसर पर भगवती षष्ठी का महोत्सव यत्नपूर्वक मनाया जाने लगा। बालकों के प्रसवगृह में छठे दिन, इक्कीसवें दिन तथा अन्नप्रशन के शुभ समय पर यत्नपूर्वक देवी की पूजा होने लगी। सर्वत्र इसका पूरा प्रचार हो गया। स्वयं राजा प्रियव्रत भी पूजा करते थे। सुव्रत! अब भगवती देवसेना का ध्यान, पूजन, स्तोत्र कहता हूँ। सुनो! यह प्रसंग कौथुमशाखा में वर्णित है। धर्म देव के मुख से सुनने का मुझे अवसर मिला था। मुने! शालग्राम की प्रतिमा, कलश अथवा वट के मूल भाग में या दीवालपर पुत्तलिका बनाकर प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने वाली शुद्ध स्वरुपिणी इन भगवती की इस प्रकार पूजा करनी चाहिये। विद्वान् पुरुष इनका इस प्रकार ध्यान करे– 'सुन्दर पुत्र, कल्याण तथा दया प्रदानन करने वाली ये दवी जगत् की माता हैं। श्वेत चम्मक के समान इनका वर्ण हैं रत्नमय भूषणों से ये अलंकृत है। इन परम पवित्रस्वरुपिणी भगवती देवसेना की मैं उपासना करता हूँ। विद्वान् पुरुष यों ध्यान करने के पश्चात भगवती

शेष पेज 17 **पर**.....

सन् 2012 के ग्रह गोचरानुसार द्वादश राशियों का वार्षिकफल

डा. (श्रीमती) कविता बंसल

ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद

प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ

मो.- 9897135686, 9219577131

प्रिय पाठको आने वाला वर्ष बारह राशियों के लिये कैसा रहेगा? गोचरीय ग्रह स्थिति के आधार पर दिया जा रहा है। जन्मांग में दशा–अन्तरदशा व ग्रह स्थिति के अनुरूप फल में परिवर्तन आ सकता है।

मेष– (चू, चे, ची, ला, लो, लू, ले, अ) :– जनवरी – वर्ष का प्रारम्भ उत्साहबर्धक एंव मनोरंजन वाला होगा। यात्राऐं लाभकारी सिद्ध होगी। लाभ–खर्च का सन्तुलन बनाऐ रखे। पारिवारिक विवादो से दूर रहे। डाक्टर्स, इजीनियर्स व खिलाडी वर्ग के लिये समय अच्छा है। मानसिक तनाव से बचें व आत्मबल बनाये रखें। **फरवरी–** सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री वर्ग से लाभ होगा। संतानपक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। वाहन ध्यान से चलाये। **मार्च–**स्वास्थ्य का ध्यान रखे, बेकार के मानसिक तनाव से बचें। विचारो में सामंजस्य स्थापित करें व सोच समझकर काम करें। विधार्थी वर्ग एकाग्रचित होकर अपने लक्ष्य पर ध्यान दे तो सफलता निश्चित मिलेगी अत्यधिक उतावलेपन से बचे। अनावश्यक खर्चो से परेशानी होगी। **अप्रैल–** व्यापारी वर्ग के लिऐ समय अनुकूल है। कामों में आ रही रूकावटो से हताश व निराश न हों धन पक्ष मजबूत होगा। मातृपक्षव, स्त्री वर्ग से लाभ मिलेगा। साझेदारी के कार्यो में सावधानी वरतें। स्थानान्तरण व प्रमोशन के अवसर मिलेंगे। विदेश में अध्ययन के लिये प्रयास सफल होगें। **मई–** क्रोध व उतावलेपन से बचें। बडें बुर्जुगो की सलाह लेकर ही कार्य करें। व्यापारी वर्ग को लाभ मिलेगा। रूका हुआ धन प्राप्त होगा। दूर दराज की यात्रांए सम्भव है। कानूनी झगडे झमेलों से दूर रहें। पारिवारिक मतभेदो से अपने आपको बचाये। **जून–** धन के लेन–देन में सावधानी वरतें। खान पान का विशेष ध्यान रखें। बाणी पर संयम वरतें। नीचस्थ अधिकारियों से परेशानी सम्भव है। अपने लक्ष्य का निर्धारित करें। व्यर्थ की भागदौड व वाद विवाद से बचें जमा खर्च का संतुलन गडबडाएगा। **जुलाई–** पारिवरजनो के साथ समय बिताएगें। नये व्यापार में पूँजी निवेश न करें। माता–पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पूर्व में किये गये प्रयास सफल होगे। जीवन–साथी से तालमेल बनाये, व्यर्थ का तनाव आपके सम्बन्धो में कटुता पैदा करेगा। किसी के वहकावें में न आये। **अगस्त–** जनसंपर्क का विस्तार होगा। पदोन्तित में बाधाएं उत्पन्न होगी। अदालती झगडो से परेशानी व तनाव रुष्ट महसूस करेंगें। वाणी पर संयम वरतें अपितु अपने हो आपसे रुष्ट हो जाऐगें। वाहन आदि का सुख मिलेगा। कलात्मक रूचि में वृद्धि होगी। प्रतियोगिताओ में भाग लेने के लिये समय उत्तम है। **सितम्बर–** व्यापारिक उलझने बढेंगी। नया कारोबार में निवेश सोच समझकर करे, धनहानि का योग है। विद्यार्थि वर्ग की कार्य क्षमता में वृद्धि होगी जीवन– साथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। छोटे भाई–बहिनो का सहयोग मिलेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। **अक्टूबर–** किये हुऐ प्रयास सफल होगे। आवेश तथा उत्तेजना से बचे अन्यथा बने बनाये कार्य बिगडेगें। पारिवारिक दायित्वो की पूर्ति होगी। व्यापार में विस्तार के लिये समय अनुकुल है। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। सृजनात्मक कार्यो में मन लगाने से तनाव कम होगा। किसी के उकसाने व वहकावे में न आऐ। **नवम्बर–** व्यर्थ के वाद विवाद व उत्तेजना से बचें। नवीन कार्यो में पूँजी निवेश करने से पहले विचार करें। विचारो में मतभेद के कारण तनाव की सम्भावना है। नशीली वस्तुओ से दूर रहे। वाहन ध्यान से चलायें। भजन सत्संग में ध्यान लगाने से नकारात्मकता दूर होगी। **दिसम्बर–** भाग्यपक्ष मजबूत है। जीवन–साथी के साथ मनोरंजन भ्रमण में समय व्यतीत होगा। संतान पक्ष पर उचित ध्यान दे। लाभ के नवीन अवसर प्राप्त होंगे। आप अपने बुद्धि विवेक से रूके हुऐ कार्य पूर्ण करेंगे। सामाजिक उत्तरदायित्व व मान सम्मान में वृद्धि होगी।

वृष – (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो) जनवरी– आपके लिऐ वर्ष का आरम्भ हलोल्लास से होगा मनोरंजन भ्रमण में समय व्यतीत होगा। देर सवेर इच्छित कामनाये पूर्व होगी। स्थान परिवर्तन के कारण सुख सुविधा में कमी आयेगी। सोच–विचारकर कार्य करें आपके चारो तरफ भ्रम व षडयंत्र की स्थितिया पैदा होगी। व्यापार में परेशानी उत्पन्न होगी। **फरवरी–** व्यर्थ की भागदौड से बचें। कर्तव्यनिष्ठ एंव कार्यपरायणता से आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। भाग्य पक्ष मजबूत है। शोधपूर्ण कार्यो में सफलता मिलेगी। दान–पुण्य, सत्कार्य से मन में प्रसन्नता रहेगी। संतान से श्रेष्ठ सुख प्राप्त होगा। विघार्थी वर्ग के लिये समय अनुकूल है। **मार्च–** मास के प्रारम्भ में मानसिक तनाव व व्यर्थ की चिंताओं सं मन व्यतित होगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आय–व्यय का संतुलन बनाये रखे। भूमि भवन का सुख प्राप्त होगा। व्यापार विस्तार के नये अवसर प्राप्त होगे। दूर–दराज की यात्रायें सम्भव है। भ्रमण–मनोरंजन,दान–पुण्य में मन लगेगा। **अप्रैल–** कलात्मक कार्यो में रूचि रहेगी। छोटे भाई बहिनो का सहयोग मिलेगा। माँ के स्वास्थ्य में कमी आयेगी। बेकार के तनाव से बचे। आध्यात्मिकता में रूचि एंव सत्संग पूजा पाठ में रूझान बढेगा। जीवन–साथी से मन मुटाव सम्भव है। कठोर परिश्रम से रूके हुऐ कार्य पूर्ण होगे। **मई–** स्थान परिवर्तन के योग है यात्राऐं सुख फलदायी होगी। प्रेम प्रसंगो से दूर रहे। एकाग्रचित में कमी आऐगी। प्रमोशन के लिये प्रयासरत रहे सफलता मिलेगी। पार्टनर से मन मुटाव की सम्भावना है। मित्रों–परिजनो पर जरूरत से ज्यादा विश्वास न करें। मासान्त स्थितियाँ आपके अनुकूल होगी। **जून–** अस्थिरता की स्थिति महसूस करेगें। बुद्धि विवेक से कार्य ले तो आप विपरित परिस्थितियों का भी लाभ उठाऐगें। किसी के वहकावें में न आयें। बैचारिक मतभेद के कारण व्यापार में शिथिलता आयेगी। खान–पान का ध्यान रखें। गरिष्ठ भोजन न करे, तन–मन स्वस्थ रखें। **जुलाई–** मातृ पक्ष से लाभ मिलेगा। चिंता–भय से मन व्याकुल होगा। पेट का ध्यान रखे शल्य चिकित्सा सम्भव है। विद्यार्थी वर्ग का पढाई से मन भटकेगा। अपने विचारों पर अडिग रहे। प्रयास से सभी कार्य पूर्ण होंगे। अत्यधिक क्रोध से बचे। नये कार्य को शुरू करने से पहले विचार विमर्श कर लें। **अगस्त–** सुख–सुविधाओं पर खर्चे होगें। व्यापार नौकरी के लिए किये गये प्रयास सफल होंगे। किसी के बीच में बाद विवाद में न उलझे। स्वास्थ्य का ध्यान रखे, अत्यधिक मसालेदार गरिष्ठ भोजन एसिडिटी, गैस पैदा करेगा। बैंक बैलेंस मे वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों से संपर्क बढेगा। **सितम्बर–** मान–सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पूर्व में किये गये प्रयास सफल होगें। भवन–वाहन का सुख प्राप्त होगा। झुकने के कार्य न करे आँतो में सूजन, कमर दर्द की तकलीफ बढेगी। थोडे से प्रयास से कार्य पूर्ण होगा। बाहय लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यापार छोटी–बडी परेशानियाँ व कठिनाईयॉ आपको विचलित कर देगी। **अक्टूबर–** भवन वाहन का सुख प्राप्त होगा। बुद्धि की प्रखरता से अपने कार्यो को प्लानिंग से करेगें। व्यर्थ के वाद–विवाद व अकारण जीवन साथी से मनमुटाव आपके रिश्तों को कमजोर करेगा। व्यवसाय में उथल–पुथल होगी। नौकरी के लिये किये गये प्रयास सफल होगें। अकारण क्रोध से बचें। **नवम्बर–** व्यर्थ की भागदौड मानसिक व शारीरिक परेशानी का कारण रहेगी। समय आपके प्रतिकूल है। सोच विचार कर निर्णय लें। दान पुण्य सत्कर्म से मानसिक शान्ति मिलेगी। बडे अधिकारियो से तालमेल बनाये रखें।

शेष पेज 18 **पर**.....

हर रंग कुछ कहता है

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

"यह दुनिया रंग विरंगी है" यह वाम्य कितना सामान्य सा और काफी प्रचलित लगता है। पर है शत–प्रतिशत सच। रंगों का प्रभाव हर तरफ हर जगह हर समय हमारे इर्द–गिर्द रहता है। सूर्य के प्रकाश को अगर ध्यान से देखा जाये तो यह भी सात रंगों में दिखायी पड़ता है। फल–फूल सब्जियाँ, पशु–पक्षी पेड़–पौधे, आदि सभी कुछ रंगों से युक्त है। रंग बहुत–प्रभावपूर्ण तरीके से मनुष्य के शरीर व मस्तिष्क पर अपना असर डालते है। कुछ रंग का प्रभाव व्यक्ति को उत्तेजित करते है तो कुछ क्रोधित तथा कुछ रंग व्यक्ति की प्रवृत्ति शान्त भी करते है। इस लेख में हम कुछ महत्त्व पूर्ण रंगों की विवेचना करेंगे।

लाल रंग– यह रंग गर्म–जोशी और प्रभुत्व का प्रतीक है। यह मंगल ग्रह का रंग है वास्तुशास्त्र के अनुसार यह रंग दक्षिण दिशा का रंग है। बुरी नजर के प्रभाव से बचने के लिए लाल रंग का इस्तेमाल करना चाहिए। यह रंग निर्भयता ऊर्जा, सहन शक्ति और मिलन सारिता प्रदान करता है। जिन व्यक्ति को लाल रंग पसन्द होता है। वह विशाल हृदय के स्वामी, उदार, गुणवान और उत्तम व्यक्तित्व वाले होते है।

नारंगी रंग–यह रंग इच्छाएं और सामाजिकता का प्रतीक है। नारंगी रंग, लाल और पीले रंग का मिश्रण है। यह जल तत्व रंग है। इसका मुख्य गुण स्वास्थ्य हैं। गति और ऊर्जा से भरपुर नारंगी रंग व्यक्ति को सामाजिक प्राणी बनाता है। नारंगी रंग पसन्द करने वाले लोग रिर्जव नेचर के होते है। नारंगी रंग काम और विवाह के देवता कामदेव का रंग है। वैवाहिक सम्बन्धों में नारंगी रंग के प्रयोग को प्राथमिकता दी जाती है। यह अस्थिर रंग है। इस रंग से प्रभावित लोगों को सट्टेवाजी व जुए से दूर रहना चाहिए। इस रंग को पसंद करने वाले लोग विद्वान, आत्मनिर्भर सहनशील और अच्छे स्वभाव वाले होते है।

पीला रंग– पीला रंग साहस और विद्वता का प्रतीक है। पीला रंग हमारे शरीर की गर्मी का सन्तुलन बनाये रखता है। पीला रंग बच्चों को सक्रिय बनाता हैं अशुभता को दूर करने के लिए व्यक्ति हल्दी का टीका व "ॐ" जैसे मांगलिक चिन्ह बनाते है। पीला रंग धन दौलत भौतिक सुख व समृद्धि से सम्बन्धित है। यह गुरु ग्रह का रंग है। सुनहरा पीला रंग शक्ति और ईश्वर की शुभता का प्रतीक है।

हरा रंग– हरा रंग जवानी और आशा का रंग है। इस रंग का स्वामी बुध ग्रह है। यह पृथ्वी तत्व का प्रतीक है। हरा रंग सूर्य के सात रंगों के एकदम मध्य में होता है। हरा रंग पसंद करने वाले व्यक्ति चतुर स्वभाव, व्यावसायिक योग्यता व सफल वक्ता होते हैं। यह रंग शांत व आराम दायक रंग है।

नीला रंग–नीला रंग विस्तार गहराई और शांति का रंग है। यह अनंत आकाश और सागरों का रंग है। यह पवित्रता वफादारी निर्मलता का प्रतीक है। नीला रंग ठंडा रंग है। यह स्थिर रंग है। नीला रंग पसंद करने वाले लोग न्याय प्रिय सत्यवादी और शान्ति स्वभाव के होते है। इस रंग का स्वामी शनि है।

आसमानी रंग– आसमानी रंग सौंदर्य औश्र सुव्यवस्था का रंग है। इस रंग का स्वामी शुक्र है। यह कलाकारों और संगीतकारों का रंग है। इस रंग से प्रभावित लोग शान्ति प्रिय होते है। यह रंग व्यक्ति को सरल, सहानुभूति आरामपसंद व्यवहारिक बनाता है। इस रंग को पसंद करने वाले लोग मैत्रीपूर्ण, ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीते है।

बैगनी रंग– बैगनी रंग लाल और नीले रंग का मिश्रण है। यह रंग पृथ्वी के गर्भ में छुपी संपदा की खोजों में सहायक है। इस रंग का जीवन के आध्यात्मिक पक्ष में सीधा सम्बन्ध है। इस रंग से प्रभावित व्यक्ति जिम्मेदार सही और निश्चित होते है। यह रंग व्यक्ति को दूर दर्शी बनाता है। इस रंग की अधिकता से व्यक्ति आत्म केद्रिंत और अंतर्मुखी बनता है। यह रंग उच्च कोटि की विद्वता और रिसर्च से सम्बन्धित है।

रंगों से व्यक्ति को एक विशेष प्रकार की सहायता मिलती है। जिसका अहसास जल्दी से नहीं होता। लेकिन जाने–अनजाने में बहुत लाभ होता हे। रंगों की व्यवस्था भी हमें सोच समझ कर करनी चाहिए जिससे रंगों का हमारे जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

❋ ❋ ❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

बेडरुम में झगड़ा होने के कारण

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

आज के भौतिकवादी एवं जागरुक समाज में पति–पत्नी दानों पढ़े लिखे होते हैं और सभी अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सजग होते हैं। परन्तु सामान्य सी समझ की कमी या वैचारिक मतभेद होने पर मनमुटाव होने लगता हैं। शिक्षित होने के कारण सार्वजनिक रुप से लड़ाई न होकर पति–पत्नी बेडरुम में ही झगड़ा करते हैं। कभी–कभी यह झगड़ा कुछ समय विशेष तक रहता हैं और कभी–कभी इसकी अवधि पूरे जीवन भर सामान्य अनबन के साथ बीतती हैं। जिससे विवाह के बाद भी वैवाहिक जीवन का आनन्द लगभग समाप्त प्रायः होता हैं।

आइए जानें बेड–रुम में झगड़ा होने के प्रमुख ज्योतिष्यि कारणः–

नाम गुण मिलानः–विवाह पूर्व कन्या व के नामों से गुण मिलान किया जाता हैं। जिसमें 18 से अधिक निर्दोष गुणों का होना आवश्यक हैं। किन्तु यदि मिलान में यदि दोष हो तो बेडरुम में झगड़े होते हैं। यह दोष निम्न हैं। जैसे गण दोष, भकुट दोष, नाड़ी दोष, दृविद्वादश दोष को मिलान में श्रेष्ठ नहीं माना जाता। प्रायः देखा जाता है कि उपरोक्त दोषों के होने पर इनके प्रभाव यदि सामान्य भी होते हैं तब भी पति–पत्नी में बेड़रुम में झगड़े की सम्भावना बढ़ जाती हैं।

मंगल दोषः–प्रायः ज्योतिषीय अनुभव में देखा गया है कि जिस दम्पत्ति के मंगल दोष है व उनका मंगल दोष निवारण अन्य ग्रह से किया गया है उनमें मुख्यतः द्वादश लग्न, चतुर्थ में स्थित मंगल वाले दम्पत्ति में लड़ाई होती हैं क्योंकि इसका मुख्य कारण सप्तम स्थान को शयन सुख हेतु भी देखा जाता हैं। मंगल के द्वादश एवं चतुर्थ में स्थित होने पर मंगल अपनी विशेष दृष्टि से सप्तम स्थान को प्रभावित करता हैं और यही स्थिति लग्नस्थ मंगल में भी देखने को मिलती हैं, क्योंकि लग्नस्थ मंगल जातक को अभिमानी, अडियल, रवैया अपनाने का गुण देता हैं।

शुक्र की स्थितिः–ज्योतिष में शुक्र को स्त्री सुख प्रदाता माना है और शुक्र की स्थिति अनुसार ही पति–पत्नी से सुख मिलने का निर्धारण विद्वान ज्योतिष्यिों द्वारा किया जाता हैं। अगर शुक्र नीच का हो अथवा षष्ठ, अष्ठम में हो तो बेडरुम में झगड़ा होने की सम्भावना रहती हैं। शुक्र के द्वारा में होने पर धर्मपत्नि को सुख प्राप्ति में कमी रहती हैं। यह योग मेष लग्न के जातक में विशेष होता हैं और बेडरुम में झगड़ा होता हैं।

सप्तमेश और सप्तम स्थान पर ग्रहों का प्रभावः–(बेडरुम में झगड़े के कारण)

1.सप्तम स्थान पर सूर्य, शनि, राहु, केतु, और मंगल में से किसी एक अथवा दो ग्रहों का सामान्य प्रभाव।

2.गुरु का दोष पूर्ण होकर सप्तमेश या सप्तम पर प्रभाव।

3.सप्तमेश का छठे, आठवें अथवा बारवें भाव में होना।

4.पाप ग्रह से सप्तम स्थान घिरा होना।

5.सप्तमेश पर पाप ग्रहों का प्रभाव।

गोचर ग्रहों का प्रभाव–दाम्पत्य सुख में गोचर ग्रह का अपना महत्त्व हैं। सभी ग्रह गतिमान हैं और राशि परिवर्तन करते हैं एवं प्रत्येक राशि को अपना प्रभाव देकर सुखी अथवा दुखी होने का कारण होते हैं। सर्वाधिक गतिमान चंद्र प्रत्येंक ढाई दिन में राशि परिवर्तन करता हैं और चंद्रमा मनसो जातः के अनुसार मन का कारक होने, जलीय ग्रह होने से प्रेम का भी कारक होता हैं। अतः प्रत्येक राशि में वह अन्य ग्रहों की भांति सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव प्रदान करता हैं। इसकी छठी, आंठवीं स्थिति प्रेम को कम करती हैं व शयन सुख में बाधा देती हैं।

प्रत्येक ग्रह का प्रभाव दाम्पत्य जीवन पर सकारात्मक जहाँ आनन्द भर देता हैं वही नकारात्मक रति सुख नष्ट कर देता हैं।

❋ ❋ ❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

" बसंत पंचमी "

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

ऋतुराज का स्वागतः सब प्रकार के पापों को दूर करने के लिए

माहात्म्यः– यह दिवस वसंत के आगमन का प्रथम दिन माना गया है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में बसंत को ऋतुराज अर्थात् सब ऋतुओं का राजा माना गया है। बसंत पंचमी बंसत ऋतु का एक प्रमुख त्यौंहार है। इस प्रकार बंसत पंचमी का त्यौंहार मानव मात्र के हृदय के आनंद और खुशी का प्रतीक कहा जाता है। बंसत ऋतु में जहां प्रकृति का सौंदर्य निखर उडता है वहीं उसकी अनुपम छाटा देखते ही बनती है। यह पर्व उत्तरी भारत का पश्चिम बंगाल में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

होली का आरंभ भी बंसती पंचमी से ही होता है। क्योंकि इस दिन प्रथम बार गुलाल उड़ाई जाती है। उत्तर प्रदेश में इसी दिन फांग उड़ाना आरंभ करते है, जिसका अंत फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है। भगवान श्रीकृष्ण इस त्यौहार के अधिदेवता हैं। इसलिए ब्रज प्रदेश में राधा तथा कृष्ण का आनंद–विनोद बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसी दिन किसान अपने नये अन्न में घी, गुड़ मिलाकर अग्नि तथा पितरों को तर्पण करते है। ब्रह्मबैवर्त पुराण के कथानुसार भगवान श्री कृष्ण ने इस दिन देवी सरस्वती पर प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था। इसीलिए विद्यार्थी तथा शिक्षा प्रेमियों के लिए यह माँ सरस्वती पर प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था इसीलिए विद्यार्थी तथा शिक्षा प्रेमियों के लिए माँ सरस्वती के पूजन का महान पर्व हैं चरक संहिता में लिखा है कि इस ऋतु में स्त्री–रमण तथा वन विहार करना चाहिए। कामदेव वसंत के अनन्य सहचर है। अतएव कामदेव व रति की भी इस तिथि को पूजा करने का विधान है।

पूजन विधि विधान–यह त्यौंहार माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन नित्य के नैमित्तिक कार्य करके शरीर पर तेल से मालिश करें फिर स्नान के बाद आभूषण धारण कर पीले वस्त्र पहनें। ब्राह्मणों को पीले चावल पीले वस्त्र दान करने पर विशेष फल की प्राप्त होती है।

इस दिन विष्णु भगवान के पूजन का माहात्म्य बताया गया है और ज्ञान की देवी सरस्वती के पूजन का विशेष विधान है। कलश स्थापित करके गंध, पुष्प, धूप, नैवद्य आदि से षोडशोचार विधि से पूजन करें। इस दिन भगवान गणेश, सूर्य, विष्णु और शिव जी को गुलाल लगाना चाहिए। गेहूँ और जौ की बालियाँ भी भगवान को अर्पित करे का विधान है। सरस्वती पूजन के पश्चात शिशुओं को तिलक लगाकर **अद्धस्नान** प्रारम्भ कराने की भी प्रथा है।

विशेषः–विद्यार्थी इस दिन से श्री सरस्वती यंत्र का पूजन प्रारंभ करे एक कागज पर "ऐं सरस्वतयै" मंत्र लिखकर पढ़ने की मेज के सामने लगा लें। परिक्षा में अच्छे परिणाओं के लिए श्री सरस्वती यंत्र का लॉकेट गले में अवश्य धारण करें।

पैराणिक कथा– जब प्रजापति ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु की

शेष पेज 17 **पर**.....

संकीर्तन से ही प्रभु प्रसन्न होते हैं

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

ईश्वर का चिंतन, मनन और उनके चरित्रों का गायन करना सदैव कल्याण कारी होता हैं। कीर्तन से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पदार्थो की प्राप्ति हो सकती हैं। जन कीर्तन संगत और संगीत के साथ किया जाता है, तो वह सकीर्तन बन जाता है। संकीर्तन के स्वर जब ऊँचे उठते है, तो वे वातावरण में आकर्षण पदैा करते है। उससे प्रभावित हुआ वायुमण्डल प्रदूषण को उसी प्रकार दूर करने लगता है, जैसे कि स्नान से शरीर में लगा मैला दूर हो जाता है। इस तथ्य को आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि शब्द से प्रकाश उत्पन्न होता है जिसकी ऊर्जा में बहुत बड़ी शक्ति होती है।

संगीत में पारंगत संगीतकार दीपक राग द्वारा दीपक जलाते रहे हैं– मेघराग द्वारा वर्षा भी करते रहे हैं। संगीत में रोगों को दूर करने की शक्ति भी विद्यमान है क्योंकि उसका प्रभाव मनुष्य के मन और प्राणों पर पड़ता है, और उन्हें स्वस्थ सुखी और उल्लास मय बनाता है इसलिए शरीर भी निरोग रहता है। संगीत के साथ भगवान का गुणवान करने से श्री वृद्धि अवश्य होती है। वैदिक काल से ही हम ईश्वर की उपासना और आराधना को श्रेष्ठ मानते रहे हैं। वेद की मान्यता रही है कि प्रदूषण अन्धकार में है, इसलिए हम संकीर्तन के माध्यम से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो–"**तमसो मा ज्योतिर्गमय।**"

संकीर्तन से एकाग्रता आती है और उससे निकली ध्वनियाँ सारे वातावरण में आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रसार करती है और वातावरण शुद्ध होता है। आरती के समय शंख व घण्टों की ध्वनि से नकारात्मक शक्तियों का क्षय होता है– यह तथ्य प्रमाणिक है। कीर्तन से काम, क्रोध, लोभ व मोह से सजी **नर्तकी आपके मन से भाग जाती है।** उच्च स्वर से किए गए स्तवन, पाठ व मंत्रोच्चार भी संकीर्तन की श्रेणी में आते है– किन्तु इसका लाभ तभी मिल सकता है, जब उसमें अपने चित्र और बुद्धि का विलय कर लिया जाय और पूर्ण समर्पण का भाव हो। उच्च स्वर से पाठ करने से ध्यान भी पाठ में बाधक नहीं बनेगा।

संकीर्तन द्वारा की गई प्रभु की प्रशंसा और गुणगान से बहुत बड़ा चमत्कार हो सकता है– पर आवश्यकता है प्रभु में भरोसा और निष्ठा रखने की। लोक परलोक की ऐसी कोई भी कामना नहीं, जो उसके द्वारा पूरी न हो सके। लोक व्यवहार में भी हम जब किसी का अभिवादन करते हैं, तो **मौन अभिवादन का प्रति उत्तर नहीं आता है–** लेकिन जब हम अपने मुख से अभिवादन का स्वर उच्चारित करते हैं तो उसका उत्तर अवश्य आता है। **भगवान से की गई प्रार्थना भी अभिवादन का स्वरुप है–** अतः उच्च स्वर से की गई प्रार्थना, आरती आदि का उत्तर भी भगवान अवश्य देते है बस उस नाद में आपका पूर्ण समर्पण हो, विश्वास हो और निष्ठा हो। **तर्क से न भगवान मिलते है और न उनकी भक्ति।** सूरदास, मीरा, कबीर, रहीम, निताई गौर आदि भक्तों ने संकीर्तन से ही प्रभु का साक्षात्कार और सानिध्य प्राप्त कर लिया था– 'प्रत्यक्ष किं प्रमाणम्'।

❋ ❋ ❋

वास्तुशास्त्र के प्रभावकारी स्त्रोत

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

वास्तुकला भवन निर्माण का विज्ञान सम्मत व्यवसाय माना जाता है जो स्वयं में अनेक गुप्त विद्याओं को समेटे हैं, मूल संस्कृत साहित्य में वास्तु का तात्पर्य है कि घर में मनुष्य और देवताओं का आवास होना समस्त ब्रह्माण्ड पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व आकाश नाम के पाँच तत्वों से मिलकर बना है और वास्तुशास्त्र का मूल उदेश्य इन पाँच तत्वों में संतुलन स्थापित करके स्वास्थ्य वर्धक और सुखी जीवन का निर्माण करना है और यही वास्तु रुपी विद्या अनेक एशियाई देशों में फेंगशुई विद्या के नाम प्रसिद्ध हुई यह विद्या भवन में भीतरी सजावट के साथ–साथ ऊर्जा के संतुलन और प्राकृतिक समन्वय में एकरुपता लाती है भाग्य और कर्म तथा आस–पास का वातावरण सभी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं वास्तु शास्त्र के नियम सुखदायी चीजों को और अधिक सुखदायक व कष्टकारी चीजों को कम कष्टकारी बनाने की सामर्थ्य रखते हैं।

भवन, दुकान, कार्यालय अथवा व्यवसाय स्थल यदि वास्तु अनुरुप नहीं होता तो इन स्थानों पर वास्तु दोष के कारण असंतुष्टि तथा विकासशीलता का अभाव बना रहता है। इसके विपरीत यदि व्यक्ति इसके नियमों को अपनायें तो व्यक्ति के सोचने समझने तथा कार्य करने की शक्ति में विकास शीलता के साथ–साथ उचित समय पर उचित निर्णय लेने की क्षमता में प्रभावकारी वृद्धि होती हैं भवन, दुकान, कार्यालय आदि में होने वाली गतिविधिया प्रकृति से स्वयं ही ऊर्जा प्राप्त कर संतुलित रुप में एक ऐसी प्रक्रिया का शुभारम्भ कर देती है जिससे व्यक्ति के सभी उद्देश्य बिना किसी अवरोध के पूर्ण हो जाते हैं, निर्माण के साथ–साथ भवन आदि की भीतरी साज सज्जा भी वास्तु अनुसार होने से धन, दौलत की प्राप्ति तथा परिवार में परस्पर प्रेम का भाव बना रहता है। सम्पत्ति, संतान एवं आनन्द की अनुभूति प्राप्ति के विषय में कुछ ऐसे सुझाव जिससे व्यक्ति अपनी गृहस्थी को सुचारु रुप से चलाकर सतुष्टि को प्राप्त करें–

1. भवन अथवा कार्यालय का उत्तर–पूर्व भाग बंद होने से ईश्वर के आर्शीवार्द का प्रवाह उन स्थानों तक नहीं पहुँच पाता। दिशाओं के बंद होने से परिवार में झगड़े तनाव और गृह स्वामी व उसकी संतान की उन्नति अवरुद्ध होती है। उत्तर पूर्व में बड़ा और खुला हुआ स्थान व्यक्ति को मान–सम्मान और धन–दौलत को प्राप्त कराने में सहायक बनता है।

2. भवन में जल संग्रह अथवा वोरिंग आदि के लिये उत्तर पूर्व दिशा सुखदायी मानी गई है इसके विपरीत दक्षिणा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा में जल संग्रह संतान व पत्नी के लिये अत्यन्त कष्टकारी होता है। दक्षिण पश्चिम में अधिक खुला स्थान घर के पुरुष सदस्यों के लिये अशुभ होता है जो वित्तीय हानि का कारण भी बनता हैं।

3. दक्षिण पश्चिम दिशा में गढ्ढा, कुआँ नीचा स्थान होने से परिवार के सदस्य गम्भीर रुप से बीमार हो सकते हैं इस दिशा में नीचा स्थान भवन में रहने वाले परिवार की उन्नति रोकने के साथ शत्रुता और मुकदमें वाजी जैसी आर्थिक समस्याओं को उत्पन्न करता है व दक्षिण पश्चिम का भूमिगत जल संग्रह परिवार के मुखिया के लिये वेहद घातक होता है इस कारण इसे हर हाल में बंद करा देना चाहिये।

4. भवन में उत्तर–पूर्व में शौचालय या अग्नि का स्थान बना देने से मानसिक तनाव, आपसी झगडे तथा धनहानि का कारण बनता है, विद्युत उपकरण जैसे जनरेटर, मोटर, वायलर, भट्टी, ट्रांसफॉर्मर आदि भवन के दक्षिण पूर्व स्थान पर लगाने चाहिये।

5. दक्षिण पूर्वी भाग यदि बड़ा हुआ है तो इस स्थान पर चोरी, अग्नि, दुर्घटना व मुकदमें आदि होने का भय बना रहता है दक्षिण पूर्व भाग में यह स्थिति दुष्प्रभावों में तीव्रता उत्पन्न करती है इस स्थान पर अराध्य वृक्षों को लगाकर इस दिशा के दोषों का शमन कर शुभ–लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

6. दक्षिण–पश्चिम का भाग भवन में बड़ा हुआ होने से धन हानि व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें बनी रहती है भूखण्ड के वर्गाकार अथवा आयताकार आकार अत्यन्त शुभ माने गये है भूखंड की अनियमित आकृति अनेक समस्यायें उत्पन्न करती हैं।

7. शयन कक्ष में भी पलंग व श्रृँगार की मेज की अनुपयुक्त स्थितियाँ वैवाहिक जीवन के लिये सुखकारी नहीं होती जिसके कारण व्यक्ति पूरी नींद न सोने के कारण बैचेन रहता है। शयनकक्ष में मनभावन पेंटिग आत्मीयता में वृद्धि करती हैं। जीवन में स्थायित्व की प्राप्ति के लिये दक्षिण–पश्चिमी दीवार पर वर्फ से ढका हिमालय पर्वत का बड़ा पोस्टर लगायें जिससे पारिवारिक रिश्ते अत्यन्त मजबूत होंगे। अतः सत्य ही कहा गया है है कि व्यक्ति वास्तु के नियमों को अपनाकर अपने जीवन को सुखकारी रुप में परिवर्तित कर सकता है।

❋ ❋ ❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 दिसम्बर - 15 जनवरी

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। फालतू के विवादों में न पड़े। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति से लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। फालतू के विवादों से बचें।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। नई योजनों से हानि होना भी सभंव हैं। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शुभ कार्यो में मन लगेगा। मित्रों से अनबन की स्थिति बनेगी।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होने पर भी हानि का भय रहेगा।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु पक्ष हावी रहेगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में धन हानि होने का भय रहेगा। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। शत्रु प्रबल रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कारोबार ठीक चलेगा।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ होने की संभावना रहेगी। दुर्घटना होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस मास में शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। कारोबार मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेगें।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– यात्रा का सुख प्राप्त होगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताऐं बनी रहेगी। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु का भय रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेगें। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इस माह में क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

दिसम्बर	जनवरी
18 कालाष्टमी व्रत **21** सफला एकादशी व्रत, **22** स्वरूपी द्वादशी, **23** अन्नपूर्णा जयंती, किसान दिवस, **24** अमावस्या, **25** ईसा मसीह जयंती (क्रिश्चियन डे), पं. मदनमोहन मालवीय जयंती, **28** श्री विनायक चतुर्थी	**1** दुर्गाष्टमी, नववर्ष प्रारम्भ (अंग्रेजी), **5** पुत्रदा एकादशी व्रत, गुरु गोविन्द सिंह जयंती, **6** प्रदोष व्रत, **8** पूर्णिमा व्रत, **9** पूर्णिमा (स्नान/दान), **11** श्री लाल बहादुर शास्त्री पुण्य दिवस, **12** संकट चौथ, **13** लोहड़ी, **14** मकर संक्रान्ति, **15** भारतीय थल सेना दिवस, स्वामी विवेकानन्द जयंती तिथि, श्री रामानन्दाचार्य,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं हैं।

गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
दिसम्बर – 29, 31
जनवरी – 1, 6, 7, 9

नामकरण संस्कार मुहूर्त
जनवरी – 6, 7

सर्वार्थ सिद्ध योग

दिसम्बर	जनवरी
18 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	01 ता. सू.उ. से 12:42 तक
23 ता. सू.उ. से 11:09 तक	03 ता. सू.उ. से 18:43 तक
25 ता. सू.उ. से 7:40 तक	04 ता. 21:38 से सू.उ. तक
	15 ता. सू.उ. से 24:34 तक

16 जनवरी - 15 फरवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास मे स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। वायुविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थति मजबूत रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। कारोबार ठीक चलेगा। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– ध न लाभ का सुख प्राप्त होगा। कारोबार या व्यवसाय ठीक चलेगा। यात्रा मे चोट लगना संभव हैं। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– प्रियजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। इस मास के अन्त मे हानि होना संभव हैं। इस मास में स्वास्थ्य उत्तम नही रहेगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी, और कारोबार ठीक से चलेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना होगी। हानि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास मे आपको राज भय रहेगा। कारोबार या व्यवसाय मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। इस मास मे स्वास्थ्य ठीक रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। मास के अन्त में धन लाभ होने की सम्भावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। इस मास मे स्वास्थ्य उत्तम नही रहेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आपको सन्तानपक्ष से अच्छी सूचनाओं की प्राप्ति होगी। कारोबार में रूकावटें आयेंगी एवं नुकसान होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– कारोबार में बदलाव होने की संभावना रहेगा। स्थानान्तर का विचार होगा। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- घरेलू परेशानियां लगी रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख मिलेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। कारोबार ठीक चलेगा। इस मास में आपको शारीरिक कष्ट होने का भय रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस मास में पित्तविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। मानसिक तनाव रहेगा। कार्यान्तर से लाभ मिलेगा। इस मास मे आपको राज भय रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। हानि होने की भी संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जनवरी	फरवरी
16 कालाष्टमी, **19** षटतिला एकादशी व्रत, **20** मास शिवरात्रि, **23** मौनी अमावस्या, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयंती, **26** तिल चतुर्थी, गौरी तृतीया, भारतीय गणतंत्र दिवस, **28** बसंत पंचमी, लाला लाजपत राय जं., **30** आरोग्य सप्तमी, शिवाजी जयंती, महात्मा गांधी पुण्य दिवस, **31** भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी	**03** जया एकादशी व्रत, **04** भीष्म द्वादशी, **05** प्रदोष व्रत, **07** पूर्णिमा स्नान समाप्त, संत रविदास जयंती, **11** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **12.** श्री दीनबंधु इण्ड्रयूज जयंती, **14.** वेलेन्टाइन डे, **15.** सीताष्टमी (जानकी जयंती)

ग्रहारम्भ मुहूर्त
जनवरी – 19, 25, 26, 28
फरवरी – 3, 4
गृह प्रवेश मुहूर्त
जनवरी– 16,18,19, 25, 26, 27, 28
फरवरी – 2, 3, 4
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जनवरी – 25, 28, 30
फरवरी – 3, 4, 6
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जनवरी – 16, 19, 26
फरवरी –3

सर्वार्थ सिद्ध योग

जनवरी	फरवरी
18 ता. 20:30 से सू.उ. तक	01 ता. 5:59 से सू.उ. तक
19 ता. सू.उ. से 19:09 तक	06 ता. 14:09 से सू.उ. तक
22 ता. 16:00 से सू.उ. तक	07 ता. 13:46 से सू.उ. तक
23 ता. 15:31 से सू.उ. तक	15 ता. सू.उ. से 24:51 तक
29 ता. 23:54 से सू.उ. तक	

'हित-अहित'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

हित करने वाला शत्रु भी बन्धु है और अहितकारी बन्धु भी शत्रु होता है। बहुत समय पहले की बात है– मैं राजा शुद्रक की क्रीड़ा–सरोवर में रहने वाले कर्पूर केलि नामक राजहंस की पुत्री कर्पूर मंजरी से प्रेम करने लगा था। उसका और हमारा प्रेम इतना बढ़ गया था थ्क हम एक–दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। यदि वह किसी दिन मुझे न दिखाई दे या मैं उसे न देख पाऊं तो मन हिलौरे लेने लगता था कि न जाने मेरी मंजरी कहां, क्या कर रही है? बस यही हाल उसका हुआ करता था– यदि मैं उसे न मिलूं तो वह बहुत परेशान हो जाया करती थी। परेशानी का एक कारण था–हमने अपने बीच किसी ऐसे व्यक्ति का सहारा नहीं लिया था जिसको कि हम बिचौलिया कहकर पुकार सकें और यह मेरा सन्देश उसे और उसका सन्देश मुझे दे सके। यही कारण था कि हम दोनों कभी–कभी एक–दूसरे से मिलने तथा दर्शन को भी तरस जाया करते थे। एक दिन मंजरी ने ही यह कथा मुझे तब सुनाई थी जब हम रात के सन्नाटे में बैठे प्रेम की बातें कर रहे थे। मंजरी ने यह कथा मुझे सुनाई और मैं तुम्हें सुना रहा हूँ–एक दिन राजा शूद्र के यहां एक वीरवर नाम का राजकुमार कहीं से आया और वह द्वारपाल से बोला, "मैं राजकुमार हूं इसलिए मुझे राजा के दर्शन करा दीजिए।"

द्वारपाल ने उसे आदरपूर्वक द्वार पर बैठाया और स्वयं राजा के पास जाकर बोला, "महाराज! कोई राजकुमार आपके दर्शन करना चाहता हैं, आपकी आज्ञा हो तो मैं उसे आपके सम्मुख पेश कर दूं?"

राजा ने द्वारपाल की बात सुन कर कहा, "राजकुमार! कैसा राजकुमार–क्या चाहता है हम से?" "महाराज! ये सब बातें तो मैंने उससे मालूम नहीं कीं, हाँ! इतना अवश्य कह सकता हूं कि वह इस समय कुछ परेशान हाल में दिखाई पड़ रहा है, हो सकता है कि आपकी सेवा करना चाहता हो।" "सेवा.....और राजकुमार–वह हमारी किस प्रकार की सेवा करना चाहता है?" राजा कुछ सोचते हुए बोला, "अच्छा तुम ऐसा करो, उसे हमारे पास लेकर आओ, हम ही उससे बात कर लेंगे।" द्वारपाल आदर से सिर झुकाकर वहां से विदा हुआ और राजकुमार को साथ लेकर राजा के पास आया।

राजकुमार ने राजा शूद्रक के सामने पहुंचकर आदरपूर्वक प्रणाम किया और अपनी विपदा कहने लगा,"महाराज! मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं।" राजा ने राजकुमार के वचन सुनकर उससे पूछा–"कहिए आप हमारी किस प्रकार की सेवा कर सकते हैं?" राजकुमार ने बताया–"महाराज! केवल दो बाहु और एक तलवार!" उसका इशारा था कि वह द्वारपाल का कार्य करने में समर्थ है। राजा ने उससे उसके इस काम का वेतन मालूम किया–"तब...आप बताइये कि आपको हम से कितना वेतन चाहिएगा?" "महाराज! मेरा वेतन आपको इस कार्य हेतु पांच–सौ मुद्राएं प्रतिदिन देना होगा।" राजकुमार ने अपना वेतन बताया।

राजा ने इतना वेतन सुनकर कहा, "इसके लिये इतना वेतन नहीं दिया जा सकता।" राजा का नकारात्मक उत्तर सुनकर वीरवर सिर झुकाकर वहां से वापस चल दिया। दरबार में उपस्थित राजा शूद्रक के कुछ मन्त्रीगर्णों ने वीरवर की बात सुनकर राजा का सुझाव दिया–"महाराज! इस राजकुमार को चार दिन का वेतन देकर नियुक्त कर लेना चाहिए। बाद में चार दिन का कार्य देखकर यह जान लेंगे कि यह कि मतलब का व्यक्ति है।" राजा की समझ ने कुछ कार्य करना आरम्भ किया, वह मन्त्री की बात सुनकर कुछ सोचने में व्यस्त हुए और कुछ क्षण बाद बोले, "अच्छा! आप उसे बुलाइये. ....।" एक मन्त्री ने राजकुमार को बुलवाया और वह राजा के पास पुनः आया।

तब राजा ने उससे कहा, "राजकुमार! हम आपको चार दिन का वेतन देते हैं आप अपना चार दिन का वेतन लेकर अपनी सेवा का कार्य आरम्भ करें और बातें बाद में होंगी।" राजा ने वीरवर को उसकी सेवानुरुप नियुक्त किया था–अब वीरवर का कार्य था कि वह द्वार पर द्वारपाल का कार्य करे। वह अपनी पूरी साज–सज्जा के साथ तलवार लेकर द्वार पर पहरा लगाता। राजा ने वीरवर को चार दिन का वेतन अग्रिम दे दिया था। वह अपना वेतन लेकर अपने घर जाने से पहले ही वेतन का तीन–चौथाई भाग लुटा चुका था।

राजा शूद्रक ने वीरवर के पीछे अपने गुप्तचर नियुक्त कर दिये थे जोकि उसकी प्रत्येक पल की खबर राजा को देते रहते थे। चार दिन बाद दो गुप्तचर महाराज को बताने लगे–"महाराज! वीरवर ने अपने वेतन का आधा भाग देवपूजन और यज्ञादि में खर्च कर दिया है। शेष धन आधा भाग देश के निर्धनों की सहायतार्थ खर्च कर दिया है। शेष धन का उपयोग उसने स्वयं पर किया है। इसी तरह चारों दिन का वेतन उसने खर्च कर दिया है। वह रात–दिन बिना उठे राजद्वार पर खड़ा रहता है। घर तब लौटता है जब आप उसे जाने की आज्ञा देते हैं।" अपने गुप्तचरों से यह सूचना सुनकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। वह बोला, "लगता है, राजकुमार किसी अच्छे राजा की सन्तान है। यदि ऐसा नहीं होता तो क्यों वह अपनी मेहनत का कमाया धन इस तरह बरबाद करता!" प्रत्युत्तर में गुप्तचरों ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया और कहा, "हां, सरकार! लगता तो कुछ ऐसा ही है। वह बड़ा दानवीर प्रतीत होता है।" राजा ने गुप्तचर की यह बात सुनकर काह, "हाँ! यह बात तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो–शूरवीर में एक अद्भूत गुण यह होता है कि वह दानवीर भी होता है और जिस शूरवीर में यह गुण नहीं होता वह केवल वीर ही कहलाता है। उसे 'शूरवीर' की संज्ञा देना नीति के विरुद्ध ही समझा जाता है।"

राजा की बात सुनकर गुप्तचर के सीने में जैसे हवा–सी भर गयी हो– वह अपना सीना फुलाता हुआ अपनी प्रशंसा सुन रहा था। उसे लग रहा था कि वह राजा के अन्य गुप्तचरों की अपेक्षा राजा के अधिक निकट होता जा रहा है। राजा ने वचन सुनकर गुप्तचरों ने विदा की आज्ञा ली। राजा ने उन्हें विदा किया और अपने शयनकक्ष में जाकर विश्राम करने लगे। अगले दिन दरबार में राजा ने एक अन्य मन्त्री से वीरवर की प्रशंसा सुनी, तो उसे लगा कि वास्तव में वीरवल आज्ञाकारी सेवक होने के साथ–साथ अपने कर्त्तव्य–पालन का सच्चा भक्त है। इसलिए उसे स्थायी रुप से अपना सेवक बनाकर अपनी

सेवा में रख लिया जाए।

राजा ने सोची हुई योजना के तहत की स्थायी रुप से सेवा के लिए नियुक्ति पत्र दिया। वीरवर नियुक्ति पत्र पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने राजा को धन्यवाद किया। एक दिन कृष्णपक्ष की चौदस की रात्रि को राजा शूद्रक अपने राजनिवास में सो रहा था। अचानक किसी के रोने की आवाज सुनकर निद्रा भंग हो गई उन्हें किसी नारी के रोने की स्पष्ट आवाज सुनाई दे रही थी। राजा ने कहा, "द्वार पर कौन है?" वीरवर बोला, "महाराज! मैं वीरवर हूं।" "जाओ देखो! यह आधी रात में कौन रो रहा है?" महाराज ने आज्ञा दी। "जो आज्ञा महाराज!" इतना कहकर वीरवर बिना सोचे–समझे ही चल दिया।

वीरवल के चले जाने के कुछ क्षण ही राजा के मन में विचार आया–"मैंने इस घोर अन्धकार में वीरवर को अकेले भेजकर उचित नहीं किया। भविष्य को कोई नहीं जानता। कहीं वीरवर पर कोई मुसीबत न आ जाए। यह विचार कर राजा स्वयं उठा और तलवार लेकर वीरवर के पीछे–पीछे चुपचाप चलने लगा। राजा ने देखा–"रात के घने अन्धेरे में बहुमूल्य आभूषणों से सुसज्जित एक रुपवती स्त्री बैठी रो रही थी। वीरवर उसके पास गया और मधुर शब्दों में धैर्य बंधाते हुए बोला, तुम कोन हो–देवी, यहां अंधेरे में अकेली बैठी क्यों रो रही हों?" "मैं राजा शुद्रक की राजलक्ष्मी हूं। बहुत समय से इसके अधिकार में हूं। अब कहीं और जाना चाहती हूं।" रुपवती स्त्री वीरवर की बात सुनकर बोली। "आप इस राज्य को छोड़कर क्यों जा रही हैं? यह तो इस राज्य की सबसे बड़ी हानि है। क्या इससे बचने का कोई उपाय नहीं है।?" वीरवर ने पूछा। वह बोली, "एक उपाय है, पर क्या तुम उस उपाय को कर सकोगे?" "क्यों नहीं, मैं जिसका अन्न खाता हूं उसके लिए क्या नहीं कर सकता।" वीरवर उसकी बात सुनकर बोला। "तो फिर सुनो! तुम अपने पुत्र शक्तिधर की बलि माता भगवती को दे दो।" राजलक्ष्मी बोली। यह भी कोई कठिन काम है। आपकी आज्ञा का पालन करना तो हम सेवकों का कर्त्तव्य है, क्योंकि कोई भी मालिक अपने सेवक का अहित नहीं सोच सकता और जो अहित सोचता है तो वह मालिक कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।" वीरवर राजलक्ष्मी को अपना कर्त्तव्य समझाते हुए कह रहा था–"राजलक्ष्मी! आप जैसी देवी मुझ जैसे व्यक्ति से कुछ मांगे और वह उसे न स्वीकारे तो वह तो अभागा ही होगा– महारानी! आपने मुझसे मेरे पुत्र का बलिदान मांगा है, मैं इस बलिदान के लिए तैयार हूं और मैं अभी जाकर अपने पुत्र को लाकर माता भगवती के चरणों में बलि देता हूं।" शेष अगले क्रमांक में.....

शेष पेज 12 **से आगे.....**

आज्ञा से सृष्टि की रचना की तो वे उसे देखने के लिए निकले उन्होंने सर्वत्र उदासी देखी। सारा वातावरण उन्हें ऐसा दिखा जैसे किसी के पास वाणी ही न हो। सुनसान सन्नाटा, उदासी भरा वातावरण देखकर उन्होंनें इसे दूर करने के लिए अपने कमंडल से चारों तरफ जल छिड़का। उन जलकणों के वृक्षों पर पड़ने से बृक्षों में से एक देवी प्रकट हुई जिनके चार हाथ थे उनमें से दो हाथों में वह वीणा पकड़े हुए थी तथा उके शेष दो हाथों में से एक में पुस्तक और दूसरे में माला थी। संसार की मूकता और उदासी भरे बातावरण को दूर करने के लिए ब्रह्माजी ने इस देवी से वीणा बजाने को कहा। वीणा के मधुर स्वरनाद से जीवों को वाणी (वॉक्शक्ति) मिल गई।

सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण ही इनका नाम सरस्वती पड़ा। वीणा वादिनी सरस्वती से गीतमय जीवन जीने की प्रेरणा है। वह विद्या संगीत और बुद्धि की देवी मानी गई हैं। जिनकी पूजा आराधना में मानव कल्याण का समग्र जीवन दर्शन निहित है। ❋❋❋

शेष पेज 8 **से आगे.....**

को पुष्पांजलि समर्पण करें, पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से इन साध्वर देवी की पूजा करने का विधान है। पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, गन्ध, पुष्प, दीप, विविध प्रकार के नैवेद्य तथा सुन्दर फलद्वारा भगवती की पूजा करनी चाहिये। उपचार अर्पण करने पूर्व **'ऊँ ह्री षष्ठीदेव्यै स्वाहा'** इस मन्त्र का उच्चारण करना विहित है। पूजक पुरुष को चाहिये कि यथाशक्ति इस अष्टाक्षर महामन्त्र का जप भी करे।

तदनन्तर मन को शान्त करके भक्तिपूर्वक स्तुति करने के पश्चात देवी को प्रणाम करे। फल प्रदान करने वाला यह उत्तम स्तोत्र सामवेद में वर्णित है। जो पुरुष देवी के उपर्युक्त अष्टाक्षर महामन्त्र का एक लाख जप करता है, उसे अवश्य ही उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा ब्रह्माजीने कहा है। मुनिवर! अब सम्पूर्ण शुभ कामनाओं को प्रदान करने वाला स्तोत्र सुनो। नारद! सबका मनोरथ पूर्ण करने वाला यह स्तोत्र वेदों में गोप्य है। 'देवी को नमस्कार हैं। महादेवी को नमस्कार है। शान्तस्वरुपिणी भगवती सिद्धा को नमस्कार है। शुभा, देवसेना एवं भगवती षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। वरदा, पुत्रदा, धनदा, सुखदा एवं मोक्षप्रदा भगवती षष्ठ को बार–बार नमस्कार है। मूल प्रकृति के छठे अंश से प्रकट होने वाली सिद्ध स्वरुपिणी भगवती षष्ठी को नमस्कार है। माया, सिद्ध, योगिनी, सारा, शारदा और परादेवी नाम से शोभा पाने वाली भगवती षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। बालकों की अधिष्ठात्री, कल्याण प्रदान करने वाली, कल्याणस्वरुपिणी एवं कर्मो के फल प्रदान करने वाली देवी षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। अपने भक्तों को प्रत्यक्षा दर्शन देने वाली तथा सबके लिये सम्पूर्ण कार्यो में पूजा प्राप्त करने की अधिकारिणी स्वामी कार्तिकेय की प्राणप्रिया देवी षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। मनुष्य जिनकी सदा वन्दना करते हैं। तथा देवताओं की रक्षा में जो तत्पर रहती है, उन शुद्धसत्त्वस्वरुपा देवी षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। हिंसा और क्रोध से रहित भगवती षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। सुरेश्वरी! तुम मुझे धन दो, प्रिया पत्नी दो और पुत्र देने की कृपा करो। महेश्वरी! तुम मुझे सम्मान दो, विजय दो और मेरे शत्रुओं का संहार कर डालों। धन और यश प्रदान करने वाली भगवती षष्ठी को बार–बार नमस्कार है। सुपूजिते! तुम भूमि दो, प्रजा दो, विद्या दो तथा कल्याण एवं जय प्रदान करो। तुम षष्ठी देवी को बार–बार नमस्कार है। इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् महाराज प्रियव्रत ने षष्ठी देवी के प्रभाव से यशस्वी पुत्र प्राप्त कर लिया। ब्रह्म! जो पुरुष भगवती षष्ठी के स्तोत्र को एक वर्ष तक श्रवण करता है, वह यदि अपुत्री हो तो दीर्घजीवी सुन्दर पुत्र प्राप्त कर लेता है। जो एक वर्ष तक भक्तिपूर्वक देवी की पूजा करके इनका यह स्तोत्र सुनता है, उसके सम्पूर्ण पाप विलीन हो जाते हैं। महान् वन्ध्या भी इसके प्रसाद से संतान प्रसव करने की योग्यता प्राप्त कर लेती है। वह भगवती देवसेना की कृपा से गुणी, विद्वान, यशस्वी, दीर्घायु एवं श्रेष्ठ पुत्र की जननी होती है। काकवन्ध्या अथवा मृतवत्सा नारी एक वर्ष तक इसका श्रवण करने के फलस्वरुप भगवती षष्ठी के प्रभाव से पुत्रवती हो जाती है। यदि बालक को रोग हो जाय तो उसके माता–पिता एक मास तक इस स्त्रोत्र का श्रवण करें तो षष्ठी देवी की कृपा से उस बालक की व्याधि शान्त हो जाती है। इस व्रत में प्रातःकाल ही नित्य नैमित्तिक कर्मो से निवत्त होकर विधिवत् संकल्प लें कि आज मैं अमुक कामना सिद्धि के लिए माँ षष्ठी देवी के व्रत का पालन करुँगा। इस प्रकार सम्पूर्ण दिन षष्ठी देवी के मंत्र का स्मरण करता हुआ षोडशोपचार पूजन सूर्यस्त से प्रारम्भ कर माँ की आराधना व स्तोत्रादि का पाठ करे और पुनः माँ के अर्पित नैवेद्य में से बालक बालिकाओं व ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित नैनेद्य अर्पण कर स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करे तो निश्चित ही माँ की अनुपम कृपा होती है। रात्रि में जागरण करते हुए मंत्र जाप व सुन्दर चरित्रों का बारम्बार श्रवण करे। यह सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करने वाला व्रत है। ❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

क्रोध, आवेग से निर्णय लेना आपके पक्ष को कमजोर करेगा। महत्वपूर्ण कार्य टाल दें। **दिसम्बर–** शत्रु अपने षड़यंत्र में कामयाब होगें। धन पक्ष कमजोर होगा। अस्थिरता की स्थिति आपको लक्ष्य से भटकायेगी। उचित समय की प्रतीक्षा करें। सृजनात्मक कार्यो में मन को लगायें। पैसा वसूली में परेशानी आयेगी। जिसके कारण व्यापार पर प्रभाव पडेगा। अपना कार्य स्वंय करने की आदत डाले अन्यथा नुकसान होगा।

मिथुन राशि– (का, की, कू ध, ड, छ, के को हा) जनवरी– वर्ष का प्रारम्भ आपके लिये विपरीत परिस्थितियों को देने वाला है। स्वास्थ्य में गिरावट व परेशानी बनी रहेगी। मन उच्चाट व उद्वेग की स्थिति से तनाव व चिड़चिडाहट बढेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखे। नये व्यापारिक अनुबंधन प्राप्त होगे। दूर–दराज की यात्राएं सम्भव है। विद्यार्थीयों के लिये समय उपयुक्त है। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। **फरवरी–**शुरुआत में थोड़ी उदासी रहेगी लेकिन शुभ समाचार प्राप्त होने से मन प्रसन्न होगा। धन आवागमन के स्त्रोत खुलेगें। विद्या बुद्धि का विकास होगा। किये गये प्रयास सफल होंगे। पदोन्नित के अवसर प्राप्त होंगे। भ्रमण–मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। ज्यादा उत्तेजना आपके बनाये काम बिगाड़ सकती है। **मार्च–**धन सम्बन्धी परेशानियाँ व अनावश्यक खर्चो से तनाव की स्थिति रहेगी। सोच विचारकर कार्य करे जल्दवाजी में किये गये कार्य आपको परेशानी में डाल सकते है। विद्या–बुद्धि का विकास होगा। जीवन–साथी से सहयोग प्राप्त होगा। व्यर्थ की चिताऐं आपके वर्तमान व भविष्य पर प्रभाव डालेगी। **अप्रेल–**धन–कुटुम्ब की स्थिति ठीक रहेगी। श्रम संघर्ष की अधिकता रहेगी। प्रेम प्रसंगों से दूर रहें। धैर्य न खोए किये गये प्रयास धीरे–धीरे सफल होंगे। उदासीनता व तनाव से दूर रहे। गल्त आदत व व्यसनों को बढ़ावा न दें। खान–पान पर नियत्रंण रखें। **मई**–उत्साह व परिश्रम से लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। भाई–बहिनों का सहयोग प्राप्त होगा। दूर–दराज की यात्राएं लाभकारी सिद्ध होगी। उच्चाधिकारीयों से सम्पर्क बढ़ेगा व सहयोग प्राप्त होगा। राजकीय कार्य में आ रही बाधाएं दूर होगी अत्यधिक क्रोध चिड़चिडाहट से दूर रहें। **जून–**स्थान परिवर्तन के योग है। दूर–दराज की यात्रा होगी। थोड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। खान–पान का ध्यान रखे। समय का सदुपयोग करें। सोचविचार कर खर्चे करें। नये पूँजी निवेश करने से बचे। अनजान व्यक्तियो के बहकावे में न आऐं। पार्टनर से दिक्कते पैदा होगी। कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। **जुलाई–**कोई भी कुविचार मन में न रखे खान–पान का ध्यान रखे दान–धर्म सत्संग में रुचि बढ़ेगी। अनावश्यक खर्चो से बचे प्रापर्टी से सम्बन्धित विवाद हो सकता है। माँ के स्वास्थ्य में गिरावट आऐगी। पार्टनर से विरोधाभास का सामना करना पड़ेगा। आलस्य का त्याग करें। यात्राएं शुभ फलदायी होगी। **अगस्त–**कार्यो में वृद्धि होगी। भूमि भवन वाहन का सुख मिलेगा। व्यापारिक लेन–देन सावधानी से करें। दोस्तों के साथ भ्रमण मनोरंजन में समय व्यतीत होगा।आकस्मिक धनलाभ की स्थिति बनेगी। बेकार के प्रलोभनों से बचें। सृजनात्मक व कलात्मक शक्ति का विकास होगा। **सितम्बर–**मेहनत–परिश्रम से किये गये प्रयास सफल होगे। धीरे–धीरे भाई–बहिनों का सहयोग प्राप्त होगा। एकाग्रचित्ता में कमी आऐगी इसलिये विद्यार्थिवर्ग को अपने लक्ष्य पर ध्यान रखना चाहिये। उत्तरदायित्व में वृद्धि होगी इसलिये सोच विचारकर निर्णय लें। धन की स्थिति सामान्य रहेगी। **अक्टूबर–**सोच–विचारकर पूँजी निवेश करें। खिलाडियों के लिये समय उत्तम है संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। भाग्योचित के रास्ते खुले हुऐ है। प्रयासों में सफलता मिलेगी। भवन वाहन का सुख मिलेगा। हस्तगत कार्यो में सफलता मिलेगी। अटके हुऐ कार्य पूर्ण होंगे। षडयंत्रों से सावधान रहे। **नवम्बर–**रोग–ऋण–शत्रु परेशान करेगे सोच समझकर निर्णय ले व्यर्थ के वाद विवाद से दूर रहे। इष्ट की शरण में रहे। परिस्थितियाँ आपके प्रतिकूल है। किसी भी महत्वपूर्ण दस्तावेज को पढ़े बिना अपनी रजाबंदी न दे अन्यथा परेशानी में घिरेगे। संतान व पिता से विचारों में सामांजस्य नहीं मिलेगा। समय को शांति व शालीनता से निकालें। **दिसम्बर–** पूर्व में आ रही परेशानियों का समय होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। जोश–क्रोध से बचें। पिता के स्वास्थ्य में कमी आऐगी। छोटे भाई–बहिनों से तनाव बढ़ेगा। विद्या बुद्धि का विकास होगा। विद्यार्थी वर्ग को अध्ययन का विशेष लाभ मिलेगा। व्यापार में नये अनुबंध प्राप्त होगे। नये संबंध जुड़ेगे।

कर्क– (हि, हू, हे, हो, डी, वि, डू डे, डो) जनवरी–वर्ष का आरम्भ हर्षोल्लास, भ्रमण–मनोरंजन से प्रारम्भ होगा। धर्म–कर्म में समय व्यतीत होगा। व्यापार–नौकरी में आ रही बाधाऐं दूर होगी। दामपत्य जीवन में मधुरता आऐगी जल्दी में निर्णय न ले। विद्यार्थीयों के लिये समय उचित नहीं है। किसी बड़े का सहयोग जरुर ले। प्रेम प्रसंगों से दूर रहें। **फरवरी–** पूर्व में आ रही समस्याऐं सुलझेगी। भाग्य–कर्म का प्रतिफल प्राप्त होगा। व्यापार–व्यवसाय में गतिशलता क्रियाशिलता बनी रहेगी। देश–विदेश से अनुबंध प्राप्त होगे। यात्रादि में सामान का ध्यान रखें। आलस्य व कठोर वाणी से बचें। यह समय दूसरों के निर्णय से काम लेने का है। अधिकारीवर्ग से सहयोग प्राप्त होगा। **मार्च–**आपके मेहनत का प्रतिफल न मिलने से मन खिन्न रहेगा। लाभ के माग में रुकावटे पैदा होगी। विरोधाभास का सामना करना पड़ेगा। बड़े निर्णयों को कुछ समय के लिये टाल दें। माता–पिता का पूर्ण सहयोग रहेगा। स्थान परिवर्तन का योग है। वाणी पर संयम रखते हुऐ अपने लक्ष्य पर ध्यान दे सफलता प्राप्त होगी। **अप्रेल–**लाभ के मार्ग प्रशस्त होगे। धन के आवागमन से मन प्रसन्न होग। स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगें। जमीन–जायदाद के पूर्व आ रहे विवाद सुलझेगें। दूसरे के बहकावे में न आऐ भ्रमित होने से बचे। इष्ट आराधना सफलता में सहायक सिद्ध होगी। **मई–**कार्य क्षेत्र में प्राप्ति होगी। धन, मान–सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। स्त्री–वर्ग से लाभ प्राप्त होगा। थोडे से प्रयास से ही महत्वकाक्षाओं की पूर्ति होगी। प्रेम प्रसंगो से दूर रहें। विद्यार्थीवर्ग अपने अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करें। पूजा–पाठ के कार्यो में रुचि बढ़ेगी। **जून–**खान–पान का ध्यान रखें। छोटे भाई–बहिनों से परेशानी सम्भव है। लाभ के कई स्त्रोत खुलेगें। थोडे से प्रयासों से ही सफलता प्राप्त होगी। भाग्य– कर्म का प्रतिफल प्राप्त होगा। लाभ–खर्च ाक सहयोग बना रहेगा। एकाग्रता में कमी आऐगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखे। उलझने बढ़ने से तनाव बढेगा। **जुलाई–**गुप्त शत्रु उजागर होगे। भाई–बहिनों से मनमुटाव की स्थिति बनेगी कंधे, गले, छाती का ध्यान रखे। व्यय कारक स्थितियाँ पैदा होगी। साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, अधूरे कार्य पूर्ण होगे। विवादित प्रार्पटी बिकने के आसार है। लाटरी–शेयर आदि में पूँजर निवेश हितकर नही होगा। तीर्थयात्रा का योग बनेगा। **अगस्त–**भ्रमण–मनोरंजन सुख–सुविधाओं पर खर्चे बढ़ेगे। शिक्षा में प्रयास करते रहे। लाभ के नये रास्ते खुलेगे। अवरोध–विरोध का सामना करना पेड़ेगा। साझेदारों से परेशानी होगी। सामाजिक गतिविधियाँ बढेगी। मासान्त में धन के आवागमन के रास्ते खुलेगे। कौटुम्बिक सुख की प्राप्ति होगी। **सितम्बर–**खान–पान सुख–वैभव में वृद्धि होगी। भूमि–भवन से सम्बन्धित विवादित मामलों में उलझने बढेंगी। पिता से सहयोग प्राप्त होगा। तीर्थाटन का सुख प्राप्त होगा। दिनचर्या को व्यस्थित करें। आलस्य का परित्याग करे अन्यथा देर–शवेर से कार्यो में रुकावटे पैदा होगी। शत्रुओं से सावधान रहें। कौटम्बिक सुख की प्राप्ति होगी। **अक्टूबर–**साहस पराक्रम में वृद्धि होगी। शत्रु भी आपका कुछ विगाड़ न पाऐगें। जमीन जायदाद से लाभ होगा। नव निर्माण के आसार बनेगें। मातृपक्ष से लाभ होगा। भजन–सत्संग में रुझान बढ़ेगा। व्यवसाय में धीरे–धीरे प्रगति होगी। विस्फोटक कार्यो से दूर हरे। विद्यार्थी वर्ग उत्तेजना से काम न ले अन्यथा परिणाम घातक सिद्ध होंगें। **नवम्बर–**विवादित स्थितियों से मानसिक व शारीरिक परेशानियाँ होगी। शत्रु अपने षडयंत्र में कामयाब होगे। परिवार में वैचारिक मतभेद के कारण उहापोह की स्थिति बनी रहेगी। बेकार के डर व भय को मन में न पालें। आत्मविश्वास में कमी आऐगी। जीवन–साथी के सहयोग से बिगड़े काम फिर से बनेंगे। **दिसम्बर–**भवन–वाहन का सुख प्राप्त होगा। परिक्षा प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु भी आपका कुछ बिगाड न पाऐगे। राजकीय कार्यो में बाधाए उत्पन्न होगी। छोटे भाई–बहिन, मित्रों का सुख प्राप्त होगा। खान–पान स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माँस–मदिरा से दूर रहें। पत्नी–बच्चों का सहयोग मिलेगा।

सिंह– (मा, मी, मू, मे, मो, ये, टी, टू, टे) जनवरी– वर्ष का प्रराम्भ मनोकूल मनोवांछित फल देने वाला है। बुद्धि– विवेक, मान सम्मान की वृद्धि होगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। विद्यार्थियो के लिये समय उत्तम है। परीक्षा प्रतियोगिता के अच्छे परिणाम मिलेंगे। मकान भवन से सम्बंधित खरीद

फरोख्त से पहले सोच ले। अत्यधिक उत्तेजना व क्रोध से बचे। **फरवरी–** स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ आपके मनोबल को कमजोर करेगी। व्यापार–नौकरी में आ रही परेशानियाँ दूर होगी। व्यापार में नये परिवर्तन सफलता देने वाले होगे। दामपत्य सुख में वृद्धि होगी। अत्यधिक क्रोध उत्तेजना से बचे कार्यो में विलम्ब व प्रतिकूल परिस्थितियाँ आपको विचलित करेगी। **मार्च–** जोश क्रोध ा से आप अपने लिये मुसीबते बढाये गें आत्मबल में कमी व तनाव की स्थिति रहेगी। प्रतिद्वन्दी आपके लिये परेशानी खड़ी करेगें। धन सम्बन्धी मामलों में लेन–देन में सर्तकता वरते। कार्य क्षेत्र में भाग दौड़ बनी रेहगी। सृजनात्मक, कलात्मक कार्य क्षेत्र में रूचि बढायें। **अप्रैल–** दूर दराज की यात्रायें बनी रहेगी। कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगें। आत्मबल कमजोर पडेगा। पूजा–पाठ, सत्संग से परिस्थितियाँ आपके अनुकूल होगी। बडो के साथ का लाभ उठायें। सृजनात्मक व रचनात्मक कार्यो से सन्तुष्टि व लाभ प्राप्त होगा। बडे अधि ाकारियो से परेशानी होगी व तबादले से असंतुष्टि होगी। **मई–** मनोरंजन–भ्रमण में समय व्यतीत होगा। विधार्थी वर्ग के लिये समय उन्नित कारक है। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी परिश्रम करे तो भाग्य का सितारा चमकेगा। उच्चधि ाकारियो से सम्पर्क बढेगा व पद–सम्मान का लाभ मिलेगा। धन को खर्च करने में समझदारी से काम ले। भूमि–भवन का सुख प्राप्त होगा। **जून–** खान–पान का ध्यान रखें। कार्य क्षेत्र में विविधताओ से अस्थिरता की स्थिति पैदा होगी। नित्य नये अनुभव प्राप्त होगें। भाग्य पक्ष मजबूत होने के कारण थोडे से परिश्रम से कार्य बनते नजर आयेगें। व्यर्थ के जोश क्रोध से बचें। विवादास्पद स्थिति से अपने आपको बचायें। ऋण भार बढने की सम्भावना है। **जुलाई–** लाभकारी योजनाओं में प्रगति होगी। खान–पान पर ध्यान रखें। जमीन जायदाद की खरीद करते समय विशेष ध्यान रखें। देश–विदेश से अनुबंध प्राप्त होंगे। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क लाभदायी सिद्ध होगा। मान–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। कुटुम्बियों से मन मुटाब रहेगा। मुहँ, गले का ध्यान रखें। बदलते मौसम में सेहत पर प्रतिकूल असर पडेगा। **अगस्त–** असामाविक खर्चो से परेशानी होगी। हस्तगत कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। परिवारीजनों से मनमुटाव से मन अप्रसन्न रहेगा। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगे। संतान पक्ष से मन असतुष्ट रहेगा। नौकरी व्यापार में तरक्की मिलेगी। स्त्री वर्ग से लाभ प्राप्त होगा। **सितम्बर–**आत्मबल व पराक्रम में वृद्धि होगी। व्यापारिक मुश्किलें दूर होगी। हस्तकला में रुचि बढ़ेगी। वाहानादि सर्तकता से चलाऐ। विवादित भूमि–भवन का निपटारा होगा। नये–नये प्रलोभनों से बचें। दूर दराज की यात्राओं से परेशानी होगी। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। आत्मश्विास को बनाऐ रखे क्योंकि आत्मविश्वास से आपको लाभ प्राप्त होगा। **अक्टूबर–**परिवार के हीरो बनकर उभरेगें। भाई–बहिनों से सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी व्यापार में तरक्की होगी। माता–पिता के स्वास्थ्य में कमी आऐगी। ज्वलशील पदार्थो से दूर रहें। दामपत्य जीवन सफलता में वृद्धि होगी। पाटनरशिप के सुखद परिणाम दृष्टिगोचर होगे। विवादों से दूर रहें। अध्ययन अध्यापन में मन लगेगा। **नवम्बर–**वैचारिक मतभेदों से दूरियाँ बढ़ेगी। अधिकारी वर्ग से तालमेल में परेशानी आऐगी। नीचस्थ अधिकारी परेशान करेगें। चुगलखोरों से सावधान रहे परिवार, व्यापार में नुकसान पहुचाऐगें। उच्चशिक्षा में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। भाई बहिनों से मनमुटाव की स्थिति पैदा होगी। आत्मबल व आत्मसम्मान में कमी आऐगी। इष्ट कृपा प्राप्त करें। **दिसम्बर–**चलते–चलते कार्यो में रुकावटे आऐगी। रचनात्मक व सृजनात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। जनसम्पर्क से लाभ प्राप्त होगा। आय–व्यय की समानता बनी रहेगी। खिलाड़ी वर्ग के लिये समय उत्तम है। विद्यार्थी वर्ग अध्ययन में मन लगाऐ। इष्ट व गुरु कृपा प्राप्त करें तो सर्वत्र अनुकूलता प्राप्त होगी। भाग्योदय के रास्ते खुलेंगे।

कन्या राशि– (टो, पा, पी, पू, पे, पो, प, ण, ठ) जनवरी– वर्ष का आरम्भ में आप कोई नया काम प्रारम्भ करेंगे। विपरीत परिस्थितियों में भी आप हिम्मत नहीं हारेगें। विद्या बुद्धि का विकास होगा। भ्रमण–मनोरंजन व सुखोपभोग के साधनों में खर्चे होंगे। छोटे भाई–बहिनों से मन मुटाव होगा। भाग्य पक्ष मजबूत है। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। **फरवरी–**शैक्षणिक कार्यो में खर्चे होगें। किसी नये प्रोजेक्ट पर काम करेंगे। भवन, वाहन के सुख में कमी आऐगी। प्रयासरत रहे लाभ के रास्ते खुलेगे। ऋण भार आपको चिंतित करेगी। कुटुम्बियों से अकारण ही झगड़े झझंट बढेगें। अचानक धन लाभ की स्थितियां बनेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे उतार–चढाव तो होते रहेंगे। **मार्च–**आत्मबल में कमी आऐगी। तीर्थाटन व भजन सत्संग का लाभ उठाऐं। भाग्य पक्ष निर्बल होने कारण आपके कार्यो में रुकावटे पैदा होगी। आर्थिक लेन–देन में सर्तक रहे। दिनचर्या का विशेष ध्यान रखे नही तो स्वास्थ्य पक्ष निर्बल होगा। धीरे–धीरे स्थितियाँ आपके अनुकूल होगी। विद्यार्थीयों के लिये समय उत्तम है। **अप्रेल–**स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखे। पार्टनर से अनबन होगी। विदेशी अनुबंध प्राप्त होंगे। यात्राए सुखकारी होगी। पठन–पाठन में रुचि बढ़ेगी। अनुसंधान के कार्यो में रुचि बढ़ेगी। नौकरी व्यवसाय में तरक्की होगी। मान–सम्माान में वृद्धि होगी। खान–पान का विशेष ध्यान रखें। **मई–**लाभ–हानि का संयोग बना रहेगा। सोच विचार कर निर्णय लें। यात्राऐं मनोरंजनकारी सिद्ध होगी। प्रेम प्रसंगों से दूर रहें। अचानक धन लाभ से समस्याओं का समाधान होगा। अचानक मान–सम्मान व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। शत्रुओं से सावधान रहें। दान–धर्म में रुचि बढ़ेगी। व्यसनों से दूर रहें। आगुन्तकों से कष्ट होगा। **जून–**अधूरे छुटे हुऐ कार्य पूर्ण होगे। थोड़े से प्रयास से सफलता मिलेगी किसी के बहकावे में न आऐ। खर्चो में बृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यस्तता में अनदेखा न करें। सुख सौभाग्य की वृद्धि होगी। अनेक योजनाओं पर कार्य करने से तनाव की स्थिति बनेगी। समय तालिका बनाकर कार्य करे तो सफल होंगे। **जुलाई–**मास के आरम्भ में योग तनाव व भ्रम की स्थिति बनेगी। लाभ व्यय की समानता रहेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें दुर्घटना व चोटिल होने की सम्भावना है। उच्चाधिकारीयों से सम्पर्क बढ़ेगा। व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आऐगी। छोटे भाई बहिनों से परेशानी होगी। जोश, क्रोध व उत्तेजना से बचें। **अगस्त–**अध्ययन में रुचि बढ़ेगी। वैज्ञानिक कार्यो में रुझान बढ़ेगा। नौकरी–व्यापार में लाभ मिलना शुरु होगा। भजन सत्संग का लाभ प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों का सानिध्य प्राप्त होगा। सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी। अदालती झगड़े परेशान करें। वाहन चलाते समय सुरक्षा का ध्यान रखें। **सितम्बर–**अनावश्यक खर्चो में वृद्धि होगी। खान–पान का विशेष ध्यान रखें। कोर्ट कचहरी के मामले परेशान करेंगे। व्यापार में उन्नति होगी। भवन वाहन का सुख प्राप्त होगा। दूर दराज की यात्राऐं सुखकारी होगी। वाणी पर नियंत्रण रखे भाषा में अपशब्द का प्रयोग न करें। ज्यादा गरिष्ठ भोजन करने से बचे वरन स्वास्थ्य बाधित होगा। **अक्टूबर–**एक अच्छे सलाहाकार के रुप में आपकी पहचान बनेगी बुद्धि विवेक के दम पर आप लक्ष्य व महत्वकाक्षाओं की पूर्ति करेंगे। नये प्रोजेक्ट में पूँजी निवेश करना पड़ सकता है। विवादास्पद परिस्थितियों से दूर रहें। पराक्रम की वजाय आप बुद्धि से काम ले। सुखोपभोग के साधनों पर व्यय बढ़ेगे। भ्रमण मनोरंजन में समय व्यतीत होगा। **नवम्बर–**अत्यधिक खर्चे बढ़ने से आत्मविश्वास मनोबल मे कमी आऐगी। वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। छोटे भाई–बहिनों व परिजनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। धर्म–कर्म में मन लगाने से आत्मिक शांति प्राप्त होगी। नौकरी व्यापार में तरक्की होगी। अचानक धन हानि के संकेत है। सोच–विचार कर कार्य करें। **दिसम्बर–**कौटुम्बिक सुखों में वृद्धि होगी। सोच–विचारकर कार्य करें। पूर्व नियोजित कार्यो में सफलता मिलेगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। जोश–क्रोध से काम न ले। छोटी–छोटी यात्राऐं परेशान करेगी। भूमि भवन क्रय करने से पहले विचार लें। दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। खान–पान का सुख मिलेगा। व्यावसायिक लाभ के रास्ते खुलेगें।

तुला राशि– (रा, र, रु रे, रो, ता कि, तू, ते) जनवरी– वर्ष का आरम्भ भ्रमण मनोरंजन में व्यतीत होगी। पूर्व में हो रहा तनाव कुछ कम होगा। धन सम्पत्ति की हानि व अनावश्यक खर्चे परेशान करेंगे। मेहनत, पराक्रम, से स्थितिया आपके अनुकूल होगी। जीवन–साथी से छोटी–छोटी तकरार सम्भव है। उच्च शिक्षा के प्रबल योग है। हाथ–पैर घुटनों के दर्द परेशान करेंगे। मौसम के अनुकूल परहेज करें। **फरवरी–**शैक्षणिक योग्यता का विकास होगा। सुख–सुविधाओं पर खर्चे होंगे। नौकरी–व्यवसाय में धीरे–धीरे तरक्की होगी। लाभकारी योजनाओं पर कार्य करें। कुटुम्बियों में मन मुटाव बनेगा। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। क्रोध से बचे, वाणी पर संयम रखें। नियमित दिनचर्या व अथक प्रयास से सफलता मिलेगी। **मार्च–**आय के नये स्त्रोत खुलेगें। मेहनत का प्रतिफल मिलेगा। अवसरों से न चूके शैक्षणिक योग्यता का विकास होगा उच्च महत्वकाक्षाऐं जन्म लेगी। स्वास्थ्य का ध्यान

रखें पूर्व में हो रहे विवादों को समाप्त करने का प्रयास करे धार्मिक, सामाजिक उत्सवों में भागीदारी रहेगी। आकस्मिक लाभ के संकेत है। **अप्रेल–**स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे, नकारात्मक को दूर करें। इष्ट का ध्यान करें, भजन सत्संग में मन लगाने से समस्याऐ दूर होती जायेगी नये जोश का संचार होगा। सुख–सुविधाओं का उपभोग करेंगे। भाग्यपक्ष निर्बल होने के कारण देर से कार्य सम्पन्न होंगे। प्रेम प्रसंगों में न उलझे। शत्रु आपका कुछ नहीं बिगाड पायेगा। **मई–**नौकरी व्यवसाय में लाभ होगा। उच्चाधिकारियों का सानिध्य प्राप्त होगा। पूर्व में आ रही बाधाऐं दूर होगी। प्रतियोगिताओं के शुभ परिणाम दृष्टिगोचर होगे। मन में अशांति व उथल–पुथल रहेगी। आत्मबल को बढ़ाये व किसी के बहकावे में न आऐ। अनावश्यक वाद–विवाद से बचे। **जून–**शिक्षा में नये अवसर प्राप्त होंगे। खर्चे का संयोग बनेगा। अकारण विवाद से बचे ससुराल पक्ष से सम्बन्धों में मधुरता आऐगी। आय–व्यय की समानता रहेगी। किसी के बहकावे में न आऐ। शत्रु आपका कुछ बिगाड़ नहीं पाऐगे। अनुसंधान के कार्यो में रुचि बढ़ेगी। आप जब तक किसी बात की गहराई न जान ले तक तक न चुप बैठेगे। **जुलाई–**देश–विदेश में लाभ के अवसर मिलेगें। वैचारिक मतभेद के चलते मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। भाग्य–कर्म से लाभ के सुअवसर प्राप्त होगें। खान–पान में रुचि बढ़ेगी। आध्यात्मिक शक्ति व गुप्त विद्याओं को सीखने का मौका मिलेगा। आँखों पैरों का ख्याल रखें। जीवन–साथी से सहयोग प्राप्त होगा। धन सम्बन्धी लेन–देन में सर्तकता वरते। **अगस्त–**व्यापार में मंदे की स्थिति बनेगी। कोर्ट कचहरी के मुकदमों से धन हानि होगी। लाभकारी यात्राऐं होगी। किसी नये अनुबंध को स्वीकारने से पहले सोच विचार कर लें। शिक्षा–साधनों पर खर्चे होंगे। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगे। वाद विवादों में न उलझे दिनचर्या को व्यवस्थति रखे। समय का ध्यान रखें। बेकार के उलझनों में न उलझे। **सितम्बर–**लाभ के नये रास्ते खुलेगें। नौकरी व्यापार में तरक्की होगी। साझेदारी व जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होाग। बेकार की गलतफहमियाँ, क्रोध व उत्तेजना से स्वास्थ्य व बने बनाऐ कामों में अड़चन आयेगी। उच्च शिक्षा के योग है। भाग्योदय के रास्ते खुलेगें। इष्ट कृपा प्राप्त करे तथा गुरुजनों के सम्पर्क में रहे तो सभी उलझनें दूर होगी। **अक्टूबर–**देश–विदेश में भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे। विवादों को उलझने न दें। दान–पुण्य कर्म में रुचि बढेगी। मान–सम्मान व लाभ की वृद्धि होगी। जोश क्रोध से काम न ले परिवारी जनों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। जीवन–साथी से तनाव सम्भव है। षड़यन्त्रों से सावधान रहें। सुख–सुविधाओं में वृद्धि होगी। **नवम्बर–**वैचारिक मतभेद बढ़ेगे। बनते हुऐ काम बिगडेगे। परिवार के विरोध का सामना करना पड़ेगा। उच्चाधिकारियों से टकराव की स्थिति बनेगी। भवन–वाहन का सुख मिलेगा। विद्या बुद्धि का विकास होगा। भ्रमण मनोरंजन में खर्चे होंगे। प्रेम–प्रसंगों से दूर रहें। खान–पान का विशेष ध्यान रखे।। वाणी पर संयम बरतें। **दिसम्बर–**आप अपनी अपेक्षाओं पर खरे उतरेगें। बुर्जुगों से तालमेल नहीं बैठेगा। बेकार के ताने आपके आत्मविश्वास को कमजोर करेगें। मेहनत पराक्रम से आप सबको अपना बना लेंगे। सुख–सुविधाऐ व धन की स्थिति मजबूत होगी। भाग्य का सितारा चमकेगा। ज्यादा उत्तेजना व जोखिम से बचे। दिनचर्या व्यवस्थित रखे।।

वृश्चिक राशि– (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या यी, यू) जनवरी–नववर्ष का स्वागत आप अपने घर परिवार के साथ मिलजुलकर करेंगे। बड़ो को सानिध्य प्राप्त होगा। कार्य क्षेत्र में जोश उमंग से आगे बढ़ेगे। किसी भी गलतफहमी को हटा कर किये गये कार्य सफल होंगे। उच्च शिक्षा के योग बनेंगे। अध्ययन अध्यापन में रुचि बढ़ेगी। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा। **फरवरी–**भवन, वाहन सुख सुविधाओं पर खर्चे होगे। साहस पराक्रम में वृद्धि होगी। शिक्षा में प्रगति होगी। परीक्षा प्रतियोगिता के लिये अच्छी तरह तैयारी करे। भाई–बहिनों, मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। कोर्ट कचहरी के मामले आपको परेशान करेगें। स्थान परिवर्तन लम्बी यात्रा सुखदायक होगी। नौकरी व्यापार में सामान्य लाभ मिलेगा। **मार्च–**मास के प्रारम्भ में काम में थोड़ी अड़चने आऐगी। शत्रु अपने षणयंत्र में कामयाब नहीं हो पाऐगे। जन सम्पर्क बढ़ेगा। सोचे गये कार्य पूर्ण न होने से मन खिन्न रहेगा। संतान पक्ष से अच्छे समाचार नहीं मिलेगें। दौड–धूप, श्रम–संघर्ष की अधिकता रहेगी। जीवनसाथी से तालमेल बैठाऐं। **अप्रेल–**देश–विदेश से व्यापारिक अनुबन्ध आएगें। उच्चकोटि के साहित्य पढ़ने में रुचि बढ़ेगी। स्त्रीयों से शीलनता बनाऐ रखें। रचनात्मक कलात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। पढ़े–लिखे शत्रुओं से आपका सामना होगा। अपने लक्ष्य पर अडिग रहे तो निश्चय ही आप सफल होंगे। **मई–**ऋण बढ़ने से चिंताऐं बढ़ेगी। प्रशासनिक कार्यो में देरी होगी। नौकरी प्रमोशन के अवसर प्राप्त होगे। चुगलखोरों से सावधान रहें। उद्योग धन्धों में गतिशिलता आऐगी। जल्दवाजी में किये गये निर्णयों से पछतावा होगा। देश–विदेश की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। **जून–**शैक्षणिक योग्यता बढ़ेगी। व्यापार में कई अनुबंध प्राप्त होगे। वही जीवन साथी व साझेदारी से तकरार बढ़ेगी। शांति व सयंम वरतते हुऐ अपने लक्ष्य प्राप्ति पर ध्यान दें। तो निश्चय भाग्य–कर्म का प्रतिफल प्राप्त होग। वैचारिक मतभेदों को दूर करें। परिवार में मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। अभीष्ट फल की प्राप्ति होगा। **जुलाई–**अत्यधिक उलझने आपकी मनःस्थिति को डाँवाडोल करेगी। आत्मबल में कमी आऐग। परंतु लाभ के मार्ग खुलते जाऐगें। विरोध की परवाह किये बिना आप आगे बढ़ते जाऐगें। अनुसंधान कार्यो में रुचि बढ़ेगी। भवन–भूमि का सुख प्राप्त होगा। धन के लेन–देन में सर्तकता बरतें। इष्ट कृपा प्राप्त करें तो सर्वत्र अनुकूलता रहेगी। **अगस्त–**धार्मिक गुरुओं से समागम का मौका प्राप्त होगा। साझेदारों से तकरार बनी रहेगी। प्रेम प्रसंगों में दरार आऐगी। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा मान–सम्मान प्रतिष्ठा का वृद्धि होगी। जन सम्पर्क का विस्तार होगा। अत्यधिक भाग–दौड़ से बचे। कंधे, पैरों का ख्याल रखें।

सितम्बर–व्यर्थ की भागदौड़ से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। राजकीय कार्यो में आ रही बाधाएं समाप्त होगी। धीरे–धीरे लाभ के संकेत मिलेगें। नये प्रलोभनों से बचें। विपरीत परिस्थितियों में अनजान व्यक्तियों से राहत मिलेगी। गलतफहमी व भ्रम की स्थिति से दूर रहें। यात्रा में असुविधा रहेगी। **अक्टूबर–**कर्म क्षेत्र में प्रगति होगी। अधुरे छुटे कार्य बनते नजर आऐगें। जोश–क्रोध से काम न लें। सुखोपभोग तथा कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित खर्चे बढ़ेगें। घर से दूर रह कर सुख साधनों का अभाव रहेगा। आय–व्यय की समानता रहेगी। यश–मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। अनुसंधनात्मक कार्यो में सफलता मिलेगी। **नवम्बर–**उलझनें बढ़ेगी, सामूहिक दबाब पढ़ने से मानसिक तनाव पैदा होगा शरीर में शिथिलता आऐगी। शत्रु अपने षड़यन्त्र में विजयी होगें। अध्यात्मिकता की तरफ अपना रुझान बढ़ाऐ सकारात्मकता आऐगी। व्यवसाय में प्रगति होती रहेगी। चुगलखारों से सावधान रहें। आपके लिये मुसीबतें खड़ी करेंगे। **दिसम्बर–**नये प्रोजेक्ट पर काम करने से पहले विचार कर लें। जल्दबाजी में किये गये निर्णयों से आप नुकसान उठा सकते है। लाभ–खर्चे की समानता बनी रहेगी। बनते–बिगडते हालात में नये आयाम मिलेंगे। आत्मविश्वास बनाऐं रखे देवआराधना से मानसिक शांति मिलेगी। योग साधना इत्यादि में रुचि बढाऐं।

धनु राशि– (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे) जनवरी–वर्ष आरंभ में कोई शुभ समाचार सुनने से मन प्रसन्न होगा। धनकारक परिस्थितियाँ बनेगी। शैक्षणिक योग्यता का विकास होगा। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। पूर्ण मनोयोग से किये गये कार्य सफल होगें। हस्तगत कार्यो में रुचि बढ़ेगी। खान–पान का सुख प्राप्त होगा। **फरवरी–**कर्म, भाग्य, परिश्रम से बिगड़े काम बनेगें। स्थायी धन में वृद्धि होगी। आगुन्तकों से मन हर्षित होगा। रचनात्मक सौन्दर्यात्मक वस्तुओं को संग्रह करने का शौक लगेगा। घर परिवार में उल्लास का वातावरण रहेगा। कुछ अविस्मरणीय यादगार पल जीवन में आऐगें। धर्म–कार्य में रुचि बढ़ेगी। **मार्च–**उच्चकोटि का साहित्य पढ़ने का मौका मिलेगा। अनुसंधानात्मक कार्यो में रुचि बढ़ेगी। नवीन कार्य आरम्भ करने के लिये समय शुभ है। भाग्य–कर्म का फल मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग अपने लक्ष्य पर ध्यान दें। रचनात्मक सृजनात्मक कार्यो से लाभ मिलेगा। बैंक बैलेंस में बढ़ोत्तरी होगी। **अप्रेल–**बुद्धि विवेक से निर्णय ले। सुविधाओं को जुटाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा। गलत पूंजी निवेश करने से बचें। आध्यात्मिक चिंतन की तरफ रुझान बढेगा। कई रहस्य उजागर होंगे। व्यवसाय में व्यवधान के बाद सफलता मिलेगी गलत संगत से दूर रहे व्यसनों से बचें। दूर–दराज की यात्राऐं होगी। **मई–**अटके हुऐ सारे कार्य पूर्ण होंगे। भाग्य का सितारा चमकेगा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। परीक्षा प्रतियोगिता के अच्छे परिणाम दिखाई देगें। सुख–सुविधाओं जमीन जायदाद का सुख मिलेगा। गलत सोहबत व व्यसनों से दूर रहें। हस्तगत कार्यो से

लाभ मिलेगा। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। **जून–**विद्यार्थी वर्ग के लिये समय परिक्षा प्रतियोगिता के लिये उत्तम है। गोचर ग्रहचाल के कारण नये अनुभव प्राप्त होगें। नये रहस्यों से पर्दा उठेगा। दोस्त–दुश्मन की सही पहचान होगी। नये अनुबंध करने, पर पहले विचार लें। किसी बड़े धार्मिक अनुष्ठान व मांगलिक कार्य में भाग लेगें। नौकरी में अचानक परिवर्तन आऐगें। **जुलाई–**साझेदारी से लाभ मिलना शुरु होगा। ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। किसी के बहकावे में न आऐ गलतफहमियों तथा षडयंत्र से बचें। अनावश्यक, बेकार के खर्चे परेशान करेंगे। सुझबुझ से काम लगे तो काम बनते चले जाऐगे। खान–पान का ध्यान रखे मौसामानुकूल भोजन करे। घुटनों की शल्य चिकित्सा की सम्भावना है। **अगस्त–**अनावश्यक खर्चो से बचे। शेयर सट्टो में न उलझे। व्यापार में विस्तार होगे लाभ के सुअवसर प्राप्त होगे। दूर दराज की यात्राओं में परेशानी होगी। समाजिकता में वृद्धि होगी। यश–मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। राजकीय कार्यो में विलम्बता आऐगी, अधिकारियों से न उलझे। नये परिवर्तन आपके लिये लाभकारी सिद्ध होगे। **सितम्बर–**स्वास्थ्य में गिरावट आऐगी। शिक्षा में प्रगति होगी। विद्यार्थियों व खिलाड़ियों के लिये समय उत्तम है। मेहनत का प्रतिफल मिलेगा। धर्म कर्म में रुचि बढ़ेगी। जीवन–साथी से सहयोग प्राप्त होगा। मकान वाहन में परेशानी बनी रहेगी। व्यसनों से बचे। दान–पुण्य के कार्यो में रुचि बढ़ेगी। शत्रुओ से सावधान रहें। गरिष्ठ भोजन करने बचे। **अक्टूबर–**कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित यात्राऐं होती रहेगी। मेहनत का प्रतिफल प्राप्त होगा। बड़ों का सानिध्य प्राप्त होगा। कर्म क्षेत्र मजबूत होगा। आशानुरुप तरक्की होगी। नींद न आने की परेशानी रहेगी। विद्यार्थी जन घर से बाहर रहकर विद्याध्ययन कर सकते है। स्थायी धन की वृद्धि होगी। यश मान–प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। **नवम्बर–**उच्चाधिकारी से सहयोग न मिल पाने के कारण आपको निराशा होगा। बड़ों का सम्मान करें। व्यापार का देश–विदेश में विस्तार होगा। दौड़–धूप की अधिकता बनी रहेगी। स्वास्थ्य को अनदेखा न करें। मेहनत–परिश्रम की अधिकता रहेगी। पुराने ऋण–शत्रु परेशान करेगें। **दिसम्बर–**लाभ के नये स्त्रोत मिलेगें। अपनी सुझबूझ से बिगड़ते हुऐ काम बनने लगेगें। कोई पुराना रोग आपको परेशान करेगा। गलत फहमी मन में न पाले स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सफलता में आ रही रुकावटे धीरे–धीरे दूर होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय उत्तम हे विशेषकर जिसको प्रतियोगिता में बैठना हो। क्रोध व उत्तेजना से बचें।

मकर राशि– (भो, ज, जी, खी, खू, खो, ग, गी) जनवरी–वर्ष की शुरुआत आपके लिये अच्छी होगी। नये अवसर प्राप्त होगें। कलात्मक संग्रह में रुचि बढ़ेगी। शिक्षा का स्तर उत्तम रहेगा। भाग्य का सितारा बुलंद होने के कारण थोड़े से प्रयास से ही सफलता अर्जित करेगें। स्वास्थ्य व धन की स्थिति उत्तम रहेगी। सुख–सुविधाओं में कमी रहेगी। **फरवरी–**सिरदर्द, घबराहट की परेशानी अनुभव करेगें। जल्दी कमाने के चक्कर में गलत रास्ते का इस्तेमाल न करें। स्वअर्जित धन कोष में वृद्धि होगी। शिक्षा का पूर्ण लाभ होगा। उत्तम भोजन दूधनादि का सुख मिलेगा। पुराने रोग आपको परेशान करेगें। भागीदारों से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। पठन–पाठन में रुचि बढेगी। **मार्च–**आपको पहले से अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सामाजिक और धार्मिक कृत्यों से धनागम होगा। सुखसुविधाओं के संसाधनो पर खर्चे होगें। भाई–बहिनों व परिवार पर खर्चे होगें। विश्वासघात से बचें। विदेश यात्रा के योग हैं। स्थान परिवर्तन लाभदायी सिद्ध होगा। नीचस्थ अधिकारियों से परेशानी सम्भव है। **अप्रेल–**अकारण विवाद से बचें। कर्मक्षेत्र व स्वास्थ्य में शिथिलता आऐगी। विद्यार्थी वर्ग अपने अध्ययन पर ध्यान दे प्रेम प्रसंगों से न उलझें। नये मेहमान, आगुन्तकों से कष्ट होगा। जीवन साथी से मधुरता बनी रहेगी। मकान वाहनादि के सुखों में कमी आऐगी। अचानक स्थानपरिवर्तन आपके लिये समस्या खड़ी करेगा। **मई–**आलस्य–प्रमाद की वृद्धि होगी जिसके कारण कामों में अचानक रुकावटें आऐगी। कुसंगति से बचें। घर परिवार के सुखों में कमी महसूस करेगें। विवादास्पद स्थितियों से बचें। तीर्थान का सुख प्राप्त होगा। अनावश्यक खर्चे से बचें। माता–पिता का स्वास्थ्य बाधित होगा। अचानक लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेगें। **जून–**आपके दिमाग में कई सारी योजनाऐ चल रही है। सुझ–बुझ व दूरगामी परिणाम देखते हुऐ उन पर कार्य करें। किसी के बहकावे में न आऐं। विद्यार्थी वर्ग को दूर से ऑफर आऐगें। प्रलोभनों से बचे। खान–पान पर ध्यान रखे सक्रमण होने का संकेत है स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। जोश क्रोध से बचें। **जुलाई–**विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुऐ आप दुश्मनों पर हावी होगें। साझेदारों व जीवन साथी से आपको सहयोग प्राप्त होगा किन्ही रुपों में इनकी सलाह उत्तम होगी कैरियर के चुनाव के लिये दो रास्ते चुनेगें। अपनी इच्छा शक्ति को दृढ़ करे और स्वयं निर्णय ले कि आपके लिये क्या उपयुक्त है। धीरे–धीरे भाग्य का सितारा बुलंद होगा। **अगस्त–**अचानक व्यापार में ऋण भार बढ़ने व षडयंत्र से नुकसान के संकेत है। नौकरी पर जाने या प्रमोशन या आवेदन के लिये समय उपयुक्त है। पठन–पाठन में खर्चे बढेगें। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। विशिष्ट आयोजनों में आपकी उपस्थिति सुखद होगी। स्त्री सुख में कमी आऐगी **सितम्बर–**धन–स्वास्थ्य की स्थिति मजबूत होगी। आराम तलब जीवन जीवन व्यतीत करेगें। गुप्त विद्याओं को प्राप्त करने की उत्कंठा बनेगी। आलस्य प्रमाद से दूर रहे तो कार्य में प्रगति आऐगी। नौंकरी–व्यापार में गतिशीलता आऐगी। लाभ के सामान्य योग बनेगें। नीचस्थ अधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा। विचौलियों से सावधान रहें। **अक्टूबर–**आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति होगी। माँ के स्वास्थ्य में कमी आऐगी। जमीन–जायदाद के विवाद उलझेगें। विद्यार्थीयों को पढ़ाई से मन हटेगा जिसका असर भविष्य के परिणामों पर पड़ेगा। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होगें, आपकी भागरीदारी सरानीय होगी। दूर दराज की यात्राओं का संयोग बना रहेगा। **नवम्बर–**वैचारिक मतभेदो से तनाव की स्थिति बनेगी। कुचक्रो में न फँसे व गलतफहमी से बचें अन्यथा कर्म की हानि होगी। किसी के दबाव में आकर काम न करे नहीं तो लाभ की बजाय नुकसान सम्भव है। अनजाने लोगों से सावधान रहें। धन–स्वास्थ्य की स्थिति ठीक रहेगी बशर्ते आप आलस्य का त्याग करें। **दिसम्बर–**षड़यंत्रों से थोड़ी राहत मिलेगी। आत्मविश्वास बनाऐ रखें तो धीरे–धीरे आप लक्ष्य की ओर बढ़ते चले जाऐगें। नये–नये अनुबंध प्राप्त होगें। रिश्वत इत्यादि से बचें। आमोद–प्रमोद, हास–परिहास में समय बिताएगें। भवन–वाहनादि में मरम्मत इत्यादि के कार्य छिड़ेगें।

कुंभ राशि– (गू, गे, गो, सा, सी, सू, सो, दा) जनवरी– वर्ष के आरम्भ में भ्रमण मनोरंजन के अवसर प्राप्त होगे। घर से दूर देशाटन का लाभ दे मिलेगा। जीवन साथी व साझेदरो से छोटी छोटी तकरार सम्भव है। क्रोध पर नियन्त्रण रखे। लाभ के मार्ग प्रशस्त होगें। कार्यक्षेत्र में विचौलियो व किसी के बहकावे में न आये। उच्चस्थ अधिकारियों व बडे भाई से लाभ मिलेगा। बेकार के भय से बचे अन्यथा नुकसान होगा। **फरवरी–** देश विदेश से व्यापार में लाभ होगा। पुराने विवादो को सुलझाने का प्रयास करें। भाग्योन्ति के संकेत है। खर्चे का संयोग बन रहा है। गलतफहमी फैलाने वालो तथा चुगलखोरों से सावधान रहें। विपरीत परिस्थितियों में भी आप अपने को संभाल लेगें। जीवन साथी से तनाब की स्थिति रहेगी। **मार्च–** विरोधाभास की स्थिति पैदा होगी। आत्मबल व आत्मशक्ति का विकास होगा। सृजानात्मक क्षमता का विकास होगा। योजनाओ में सफलता के संकेत है। अनजान व्यक्तियो से सावधान रहे। धन के लेन देन में सर्तकता वरतें। खान पान पर विशेष ध्यान दे उदार विकार, पैर सिर में तकलीफ वढ सकती है। विवादो को तूल न दें। **अप्रैल–** जल्दवाजी में लिये गये निर्णय धनहानि की ओर संकेत दे रहे सावधान रहें। गुप्त शत्रु षडयत्रों में कामयाब होगें। कुसंगत व व्यसनी से दूर रहें। सुख–साधनो में बढोत्तरी होगी। साझेदारो से सहयोग प्राप्त होगा। विवादित मसलों से तनाव बना रहेगा। क्रोध–उत्तेजना से वचें। व्यापार में अथक प्रयास से लाभ के अवसर प्राप्त होगें। **मई–** पुराने ऋण, शत्रु परेशान करेंगें। साझेदारो व जीवन साथी के साथ मिलकर कार्य करें तो प्रगति होगी। मान सम्मान प्रातिष्ठा की वृद्धि होगी। धन के लेन देन में सर्तकता बातें। संतान पक्ष से शुभ समाचार नही मिलेंगे। विचौलियो व अनजान व्यक्तियो से सावधान रहें। नये प्रलोभनो से बचें यह आपको नुकसान देंगे। **जून–** अत्यधिक सुख सुविधाओं से परेशानी अनुभव करेगें। कई विषयों को जानने का मौका मिलेगा। लाभकारी योजनाओ पर कार्य करें। किसी के बहकावे में न आये। खानपान का परहेज करें। उलझनों से बाहर निकलने का प्रयास करें। नया सिखने के लिये समय ठीक है। स्वास्थ्य में गिरावट आऐगी। पेट का ख्याल रखें। **जुलाई–** व्यापार, नौकरी में तरक्की के योग है। तनाव से बचे अपने स्वास्थ्य को अनदेखा न करें। व्यर्थ भाग दौड आपके लिये परेशानी का कारण बन सकती है। शल्य चिकित्सा का योग है। सावधान रहें। संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेगें। सुख साधनो में वृद्धि होगी। स्त्री–वर्ग से लाभ मिलेगा।

अनुसंधानात्मक कार्यो में रूचि बढेगी। **अगस्त–** भाग्य का सितारा बुलंद होगा। थोडे से परिश्रम से लाभ मिलेगा। शत्रु आपका कुछ विगाड न पाऐगा। जनसम्पर्क से लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। संतान की तरक्की से मन प्रसन्न होगा। साझेदारी व जीवन साथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। स्त्रियो से लाभ होगा। छोटे भाई से परेशानी होगी। सुखोपभोग में अल्पता रहेगी। **सितम्बर–** पुराने, ऋण, शत्रु परेशान करेगें। व्यापार में तरक्की व लाभ के योग है। देव आराधना से सौभाग्य को प्राप्ति होगी। धार्मिक यात्राऐ व दूर दराज की यात्राऐ सम्भव है विलासपूर्ण वस्तुओ का उपयोग करेंगे। जनसम्पर्क से लाभ मिलेगा। मेहनत व लगन से सुअवसर प्राप्त होगें पूर्व नियोजित कार्यो में अडचने आयंगी। **अक्टूबर–** ससुराल का सहयोग प्राप्त होगा। जीवनसाथी से धन प्राप्त होगा। कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी। स्त्रीवर्ग से लाभ मिलेगा व सौभाग्य के रास्ते खुलेगें। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्राऐं भाग्योदयकारक रहेगी। धर्म, अध्यात्म में आस्था बनेगी। ज्वलनशील पदार्थो से दूर रहें। व्यसनो से दूर रहे कार्य क्षेत्र में हानि करेगें। धन का नाश करेगें। **नवम्बर–** वैचारिक मतभेद उत्पन्न होने से दिक्कतें पैदा होगी। साझेदारो से तकरार की स्थिति बनेगी। चुगलखोरो से सावधान रहे। बेकार के भ्रम व भय से कार्य क्षेत्र में हानि होगी। सुख– सुविधाओं में कमी आऐगी। नये पूँजी निवेश से बचे। बेकार के प्रलोचन धन का नुकसान कराऐगें। लम्बी यात्राओं का संयोग बनेगा। **दिसम्बर–** धन खर्च करने मे सावधानी वरतें। मेहनत कर्म का प्रतिफल मिलेगा। झूठे आश्वासनो में न आयें। लम्बी यात्रायें सुखद व सौभाग्य वर्धक रहेगी। धर्म अध्यात्य में आस्था बढेगी। व्यापार में लाभ व तरक्की मिलेगी। संतान पक्ष की शैक्षणिक योगयता में प्रगति होगी। बढती जिम्मेदारियो को सभांले अपने अंदर परिवर्तन लाऐं।

मीन राशि– (दी, दु, थ, झ, त्र, दे दो, चा, ची) जनवरी– वर्ष की शरूआत आप परिवार के साथ, हषोल्लास मौज मस्ती से करेगें। जीवन साथी व साझेदारो से तनाव की स्थिति रहेगी। पुराने रोग दूर होगें। कार्य क्षेत्र में आधिकारी वर्ग से परेशानी होगी। दुष्टाचार से बचें अचानक धनलाभ के सकेंत है। विवादों में न उलझे। धैर्य के नाम पर दिखावा व ढ़ोंग न करें। **फरवरी–** खान–पान धन वैभव का सुखोपभोग करेगें। शारीरिक कष्ट परेशान करेंगे। दिनचर्या को व्यवस्थित करें। कार्यो में देरी से नुकसान उठाना पड सकता है। जनसम्पर्क में वृद्धि होगी। धन के लेन देन में सर्तक रहें। सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद हो सकता है। परिवार जनों से मन मुटाव की स्थिति पैदा होगी। **मार्च–** मेहनत परिश्रम का प्रतिफल न मिलने से मन विचलित होगा। कुप्रचारो से सावधान रहें। जल्दवाजी में लिये गये निर्णय आपको परेशानी में डाल सकते है। दूर दराज की यात्राओ सं कष्ट होगा। विपरीत परिस्थियों का सामना करना पडेगा। शत्रु आपका कुछ नही बिगाड़ पाऐगें। खान–पान का सुख प्राप्त होगा। **अप्रैल–** शत्रु आप पर हावी होने की कोशिश करेगें। कुसगंति व व्यसनों से दूर रहें। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। सतांन से मन प्रसन्न रहेगा। परिवारिक व कुटुम्बजन आपको परेशान करेगें। धन–हानि के संकेत है। इष्ट कृपा प्राप्त करे तभी स्थिति आपके पक्ष में आ सकती है। रूपये–पैसे के लेन–देन में सावधानी बरतें। **मई–** कोर्ट कचहरी के विवाद आपको परेशान करेगें। आधिकारी वर्ग से आपको नुकसान उठाना पड सकता है। वाणी पर संयम वरतें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। अनजान व्यक्तियों से सावधान रहें। आगुन्तको मित्रो से कष्ट होगा। भोजन खान–पान पर नियन्त्रण रखें। अनुसंधानात्मक कार्यो में रूचि बढेगी। **जून–** उत्साह पराक्रम की वृद्धि होगी। जमीन जायदाद बिकने के आसार है। संभलकर कार्य करे पारिवारिक विवाद ज्यादा बढेगें। कोर्ट कचहरी के मुकदमे परेशानी करेगें। कुछ लोग आपका फायदा उठाऐगें। आत्मविशवास बनाये रखे। साझेदार व जीवनसाथी किसी के वहकावे में आकर आप पर हावी होगें। सम्पति विवाद आपको परेशान करेंगे। **जुलाई–** लाभ के अवसर प्राप्त होगें। सृजानात्मक तथा रचानात्मक कार्यो में रूचि बढेगी। व्यापार में तरक्की नौकरी में पदोन्नित के अवसर प्राप्त होगें। पेट का ध्यान रखें। कुसंगति से बचे। किसी के वहकावें में न आये। जोश–क्रोध, उत्तेजना से बचे। जनसम्पर्क में वृद्धि होगी। पुराने जमीनी विवाद परेशान कर सकते है। **अगस्त–** गलत संगति से बचे। गैस एसीडिटी, शल्य चिकित्सा, कुटुम्बीय विवाद, पति–पत्नि के बीच विवाद जैसी समस्याऐ अधिकाधिक बनी रहेगी। सुख सुविधाओ का विस्तार होगा। महत्वकांक्षी योजनाये सफल होगी। धेर्य के प्रति आस्था बढेगी। थोडा सा तनाव व चिडचिडाहट महसूस करेगें। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान बनाऐ रखे धैर्य से काम लें। **सितम्बर–** पुरानी निराशाऐ खत्म होगी। धार्मिक यात्राओ का अवसर प्राप्त होगा। लाभकारी प्रोजेक्ट पर काम करेगें। शत्रु आपका कुछ विगाड़ नही पायेगा। साथी से मनमुटाव सम्भव है। सुख सुविधाओ पर आवश्यक खर्चा करने से बचें। दिखावें पर न जाऐ। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। खान–पान पर नियन्त्रण रखें। **अक्टूबर–** हस्तगत कार्यो में निपुणता आऐगी। व्यापार में तरक्की होगी। अधिक उत्तेजना व लापरवाही से बचे। ज्वलनशील पदार्थो से बचें। गूढ रहस्यो को जानने की उत्करंठा बनी रहेगी। संतान पक्ष से मन प्रसन्न रहेगा। बेकार के अनुबंध स्वीकार न करें। अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। आत्मविश्वास बढेगा। **नवम्बर–** आपके गलत निर्णय आपको मुसीबत में न डाल दें। मित्रों व आगुन्तको से कष्ट होगा। सोच–विचार, बिना जल्दवाजी के निर्णय ले। वैचारिक मतभेद बनेगे। सुसराल पक्ष से अनबन रहेगी। आत्मसम्मान व आत्मविश्वास बनाये रखें। तीर्थाटन व देशाटन का लाभ मिलेगा। स्त्री वर्ग से परेशानी होगी। शांति बनायें रखे। दिनचर्या व्यवस्थित रखें। **दिसम्बर–** रहस्यो से पर्दा उठेगा। पैतृक सम्पति का लाभ मिलेगा। आकस्मिक शत्रु आपको परेशान करेंगे। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। लाभ के मार्ग प्रशस्त होगें। शिक्षा का विस्तार होगा। उच्च शिक्षा के योग है। खर्चे यथावत बने रहेगें। मन स्थिति डाँवाडोल रहेगी। परोपकारी भावनाऐ प्रबल होगी।

❋ ❋ ❋

मास	सूर्य	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
जनवरी	15 मकर	24 सिंह(व)	4 धनु/24 मकर	मेष	9 कुम्भ	तुला	वृश्चिक
फरवरी	13 कुंभ	सिंह	11 कुंभ/27 मीन	मेष	3 मीन/29 मेष	9 तुला (व)	वृश्चिक
मार्च	14 मीन	सिंह	12 मीन (व)	मेष	28 वृष	तुला (व)	वृश्चिक
अप्रैल	13 मेष	14 सिंह (मा)	2 कुम्भ (व) 4 कुम्भ (मा)/6 मीन	मेष	वृष	तुला (व)	वृश्चिक
मई	14 वृष	सिंह	6 मेष/21 वृष	17 वृष	17 वृष (व)	16 कन्या (व)	वृश्चिक
जून	14 मिथुन	22 कन्या	4 मिथुन/21 कर्क	वृष	वृष	24 कन्या (मा.)	वृश्चिक
जुलाई	16 कर्क	कन्या	15 कर्क (व)	वृष	वृष/31 मिथुन	कन्या	वृश्चिक
अगस्त	16 सिंह	14 तुला	8 कर्क (मा)/28 सिंह	वृष	मिथुन	4 तुला	वृश्चिक
सितम्बर	16 कन्या	28 वृश्चिक	13 कन्या	वृष	1 कर्क/28 सिंह	तुला	वृश्चिक
अक्टूबर	17 तुला	वृश्चिक	1 तुला/23 वृश्चिक	5 वृष (व)	23 कन्या	तुला	वृश्चिक
नवम्बर	16 वृश्चिक	9 धनु	7वृश्चि.(व)/19तुला/27तुला(मा)	वृष	17 तुला	तुला	वृश्चिक
दिसम्बर	15 धनु	18 मकर	6 वृश्चिक/27 धनु	वृष	11 वृश्चिक	तुला	23 तुला